

## سُورَةُ الْأَرَافِ - 7

سُورَةُ الْأَرَافِ

## سُورَةُ الْأَرَافِ के संक्षिप्त विषय

यह سُورَةٌ مَبَكِّيَةٌ है, इस में 206 आयतें हैं।

इस में «आराफ़» की चर्चा है इस लिये इस का नाम سُورَةُ الْأَرَافِ है।

- इस में अल्लाह के भेजे हुये नबी का अनुसरण करने पर बल दिया गया है, जिस में डराने तथा सावधान करने की भाषा अपनाई गई है।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) को शैतान के धोखा देने का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य उस से सावधान रहे।
- इस में यह बताया गया है कि अगले नवियों की जातियाँ नवियों के विरोध का दुष्परिणाम देख चुकी है, फिर अहले किताब को संबोधित किया गया है और एक जगह पूरे संसार वासियों को संबोधित किया गया है।
- इस में बताया गया है कि सभी नवियों ने एक अल्लाह की वंदना की, और उसी की ओर बुलाया और सब का मूल धर्म एक है।
- इस में यह भी बताया गया है कि ईमान लाने के पश्चात् निफाक (द्विधा) का क्या दुष्परिणाम होता है और वचन तोड़ने का अन्त क्या होता है।
- सُورَةُ الْأَرَافِ के अन्त में नबी سल्लालूहُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖہُ وَسَلَّمَ और आप के साथियों को उपदेश देने के कुछ गुण बताये गये हैं और विरोधियों की बातों को सहन करने तथा उत्तोजित हो कर ऐसा कार्य करने से रोका गया है जो इस्लाम के लिये हानिकारक हो।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम, साद।

الْتَّصَّ

2. यह पुस्तक है, जो आप की ओर  
उतारी गई है। अतः (हे नबी!) आप  
के मन में इस से कोई संकोच न

كَبَّ أَتْوَلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ  
مَنْهُ لِتَنْذِيرِهِ وَذُكْرُ الْمُؤْمِنِينَ

हो, ताकि आप इस के द्वारा सावधान करें<sup>[1]</sup>, और ईमान वालों के लिये उपदेश है।

3. (हे लोगो!) जो तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर उतारा गया है उस पर चलो, और उस के सिवा दूसरे सहायकों के पीछे न चलो। तुम बहुत थोड़ी शिक्षा लेते हो।
4. तथा बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया है, उन पर हमारा प्रकोप अकस्मात रात्रि में आया या जब वह दोपहर के समय आराम कर रहे थे।
5. और जब उन पर हमारा प्रकोप आ पड़ा तो उन की पुकार यही थी कि वास्तव में हम ही अत्याचारी<sup>[2]</sup> थे।
6. तो हम उन से अवश्य प्रश्न करेंगे जिन के पास रसूलों को भेजा गया तथा रसूलों से भी अवश्य<sup>[3]</sup> प्रश्न करेंगे।
7. फिर हम अपने ज्ञान से उन के समक्ष वास्तविकता का वर्णन कर देंगे। तथा हम अनुपस्थित नहीं थे।
8. तथा उस (प्रलय के) दिन (कर्मों

إِنَّمَا أَشِدُّ الْيَكْرَمَةِ مَنْ رَكِيمٌ وَلَا تَتَبَقَّعُ  
مِنْ دُونِهِ أَوْ لِيَاءُهُ فَلَيْلًا مَا نَذَّرُونَ ①

وَكَمْ مِنْ قَرِيبٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهُمْ بِأَسْنَابِهِمْ  
أَوْ هُمْ قَلِيلُونَ ②

فَهَا كَانَ دُعُوهُمْ إِذْ جَاءُهُمْ بِأَسْنَابِهِمْ كَانُوا لَهُمْ  
كُلُّاً ظَلِيمِينَ ③

فَلَكَسْتَنَّ الَّذِينَ أُنْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَكَسْتَنَّ  
الْمُرْسَلِينَ ④

فَلَنَقْصَنَ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ فَمَا كَانُوا غَافِلِينَ ⑤

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِنَ الْحُقُوقُ فَمَنْ نَقْلَتْ مَوَازِينُهُ

1 अर्थात् अल्लाह के इन्कार तथा उस के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् अपनी हठधर्मी को उस समय स्वीकार किया।

3 अर्थात् प्रलय के दिन उन समुदायों से प्रश्न किया जायेगा कि तुम्हारे पास रसूल आये या नहीं? वह उत्तर देंगे: आये थे। परन्तु हम ही अत्याचारी थे। हम ने उन की एक न सुनी। फिर रसूलों से प्रश्न किया जायेगा कि उन्होंने अल्लाह का संदेश पहुँचाया या नहीं? तो वह कहेंगे: अवश्य हम ने तेरा संदेश पहुँचा दिया।

- की) तौल न्याय के साथ होगी।  
फिर जिस के पलड़े भारी होंगे वही  
सफल होंगे।
9. और जिन के पलड़े हलके होंगे तो  
वही स्वयं को क्षति में डाल लिये  
होंगे। क्यों कि वह हमारी आयतों के  
साथ अत्याचार करते<sup>[1]</sup> रहे।
10. तथा हम ने तुम्हें धरती में अधिकार  
दिया और उस में तुम्हारे लिये जीवन  
के संसाधन बनाये। तुम थोड़े ही  
कृतज्ञ होते हो।
11. और हम ने ही तुम्हें पैदा  
किया<sup>[2]</sup>, फिर तुम्हारा रूप बनाया,  
फिर हम ने फ़ौरिश्तों से कहा कि  
आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के  
सिवा सब ने सज्दा किया। वह सज्दा  
करने वालों में से न हुआ।
12. अल्लाह ने उस से कहा: किस बात ने  
तुझे सज्दा करने से रोक दिया जब  
कि मैं ने तुझे आदेश दिया था? उस  
ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। मेरी  
रचना तू ने अग्नि से की, और उस  
की मिट्ठी से।
13. तो अल्लाह ने कहा: इस (स्वर्ग) से  
उतर जा। तेरे लिये यह योग्य नहीं  
कि इस में घमंड करो। तू निकल जा।  
वास्तव में तू अपमानितों में है।

1 भावार्थ यह है कि यह अल्लाह का नियम है कि प्रत्येक व्यक्ति तथा समुदाय को  
उन के कर्मानुसार फल मिलेगा। और कर्मों की तौल के लिये अल्लाह ने नाप  
निर्धारित कर दी है।

2 अर्थात् मूल पुरुष आदम को अस्तित्व दिया।

فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

وَمَنْ خَفَقَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ خَسَرُوا  
أَنفُسُهُمْ بِهَا كَانُوا يَأْتِيَنَا يَظْلِمُونَ ۝

وَلَقَدْ مَكَثْنَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لِلنَّاسِ فِيهَا  
مَعَايِشَ قَيِّلًا مَا تَشَاءُونَ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ لَمَّا صَوَرْنَاكُمْ لَّهُ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ  
إِسْجُودُوا لِلَّادُورِ فَسَجَدُوا لِلْأَرَابِيلَيْشَ لَهُ بَلَى مَنْ  
الْعَجِيدُونَ ۝

قَالَ مَا مَنَعَكُمْ أَلَا تَسْجُدُوا إِذْ أَمْرَيْتُكُمْ قَالَ أَنَا خَيْرٌ  
مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ

قَالَ فَأَهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا  
فَأَخْرُجْ رَأْكَ مِنَ الصَّفِيرِ ۝

14. उस ने कहा: मुझे उस दिन तक के लिये अवसर दे दो जब लोग फिर जीवित किये जायेंगे।
15. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दिया जा रहा है।
16. उस ने कहा: तो जिस प्रकार तू ने मुझे कुपथ किया है मैं भी तेरी सीधी राह पर इन की धात में लगा रहूँगा।
17. फिर उन के पास उन के आगे और पीछे तथा दायें और बायें से आऊँगा।<sup>[1]</sup> और तू उन में से अधिकृतर को (अपना) कृतज्ञ नहीं पायेगा।<sup>[2]</sup>
18. अल्लाह ने कहा: यहाँ से अपमानित धिक्कारा हुआ निकल जा। जो भी उन में से तेरी राह चलेगा तो मैं तुम सभी से नरक को अवश्य भर दूँगा।
19. और हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो और जहाँ से चाहो खाओ। और इस वृक्ष के समीप न जाना अन्यथा अत्याचारियों में हो जाओगे।
20. तो शैतान ने दोनों को संशय में डाल दिया, ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों को खोल दे जो उन से छुपाये गये थे। और कहा: तुम्हारे पालनहार ने तुम दोनों को इस वृक्ष से केवल इसलिये रोक दिया है कि तुम दोनों फ़रिश्ते अथवा सदावासी हो जाओगे।

1 अर्थात् प्रत्येक दिशा से घेरूँगा और कुपथ करूँगा।

2 शैतान ने अपना विचार सच्च कर दिखाया और अधिकृत लोग उस के जाल में फ़ंस कर शिर्क जैसे महा पाप में पड़ गये। (देखिये सूरह सबा आयत-20)

قَالَ أَنْظُرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبَعَّثُونَ<sup>①</sup>

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ<sup>٢</sup>

قَالَ فَإِنَّمَا أَغْوِيَنِي لِأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ  
الْمُسْتَقِيمَ<sup>٣</sup>

لَعْنَكُمْ مِنْ بَنِي إِبْرَاهِيمَ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَلْيَازِيمْ  
وَعَنْ شَمَائِيلِهِمْ وَلَا يَحِدُ الْكَوْهُمْ شِيكِينَ<sup>٤</sup>

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْدُودًا وَلَا تَدْخُلْ حَرَارَاتِنَّ  
الْأَمْانَ حَمْمَهُ وَمِنْكُمْ أَجْمَعِينَ<sup>٥</sup>

وَبِإِدَمْ أَشْكُنْ أَنْتَ وَرَوْجُكَ الْجِنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ  
شِئْتُمْ وَلَا تَعْرِبَا هَذِهِ السَّجَرَةَ فَكُلُونَا مِنْ  
الْفَلَيْبِينَ<sup>٦</sup>

فَوْسَسْ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبَدِّي لَهُمَا ذُرِّي عَنْهُمَا  
مِنْ سَوْا لِهِمَا وَقَالَ مَا نَهِيَكُمَا بِمَا عَنْ هَذِهِ  
السَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكِينَ أَوْ تَكُونَا مِنْ  
الْغَلِيلِينَ<sup>٧</sup>

21. तथा दोनों के लिये शपथ दी कि वास्तव में मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ।
22. तो उन दोनों को धोखे से रिझा लिया। फिर जब दोनों ने उस वृक्ष का स्वाद लिया तो उन के लिये उन के गुप्तांग खुल गये और वे उन पर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे। और उन्हें उन के पालनहार ने आवाज़ दी: क्या मैं ने तुम्हें इस वृक्ष से नहीं रोका था। और तुम दोनों से नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रू है?
23. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हम ने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया और यदि तू हमें क्षमा तथा हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य ही नाश हो<sup>[1]</sup> जायेंगे।
24. उस ने कहा: तुम सब उत्तरो, तुम एक दूसरे के शत्रू हो। और तुम्हारे लिये धरती में रहना और एक निर्धारित समय तक जीवन का साधन है।
25. तथा कहा: तुम उसी में जीवित रहोगे और उसी में मरोगे और उसी से (फिर) निकाले जाओगे।
26. हे आदम के पुत्रो! हम ने तुम पर ऐसा वस्त्र उतार दिया है जो तुम्हारे गुप्तांगों को छुपाता, तथा शोभा है। और अल्लाह की आज्ञाकारिता का वस्त्र ही सर्वोत्तम है। यह अल्लाह

وَقَاتَسَهُمَا إِذِئْنِ الْكَلَائِينَ التَّصْحِيفَينَ

فَدَلَّهُمْ إِلَيْغُورِيْكَلَمَّا ذَاقَ الشَّجَرَةَ بَدَّلَ كَلَمَّا سَوَّاهُمَا  
وَكَفِيْكَلَمَّا غَصَبُنَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَرَقِ الشَّجَرَةِ وَنَادَاهُمْ لِيْكَلَمَّا  
أَغْرَىهُمَا عَنْ تِلْكَمَا الشَّجَرَةِ وَأَقْلَلَ كَلَمَّا الشَّيْطَانَ  
كَلَمَّا عَدَدَهُمِينَ

قَالَ لَارِبَّتَنَا كَلَمَّنَا أَفْسَنَا وَإِنْ لَمْ تَفْعِلْنَا وَتَرْحَمْنَا  
لَكَلُونَنَّ مِنَ الْخَيْرِينَ

قَالَ أَهِيْطُوا بِعَصْلَمَ لِيَعْصِيْ عَدُوَّ وَكَلُونَنَّ  
الْأَرْضَ مُسْقِرَّ وَمَتَاعُ إِلَى جِينَ

قَالَ فِيهَا حَيَوْنَ وَفِيهَا نَمُونَ وَمِنْهَا مُخْرَجُونَ

يَبْنَى أَدَمَ قَدَّ أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا نَوْلَى سَوَالِكُمْ  
وَرِيشًا وَلِيَاسُ الشَّقْوَى ذَلِكَ خَيْرٌ ذَلِكَ مِنَ الْيَتَمَّ  
الَّذِي لَعَلَّهُمْ يَدْكُرُونَ

1 अर्थात् आदम तथा हब्बा ने अपने पाप के लिये अल्लाह से क्षमा माँग ली। शैतान के समान अभिमान नहीं किया।

की आयतों में से एक है, ताकि वह शिक्षा लें।<sup>[1]</sup>

27. हे आदम के पुत्रो! ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें बहका दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकाल दिया, उन के बस्त्र उतरवा दिये ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखा दे वास्तव में वह तथा उस की जाति तुम्हें ऐसे स्थान से देखती है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते। वास्तव में हम ने शैतानों को उन का सहायक बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।
28. तथा जब वह (मुशर्रिक) कोई निर्लज्जा का काम करते हैं तो कहते हैं कि इसी (रीति) पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। तथा अल्लाह ने हमें इस का आदेश दिया है। (हे नबी!) आप उन से कह दें कि अल्लाह कभी निर्लज्जा का आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात का आरोप धरते हो जिसे तुम नहीं जानते?
29. आप उन से कह दें कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है। (और वह यह है कि) प्रत्येक मस्जिद में नमाज़ के समय अपना ध्यान सीधे उसी की ओर करो<sup>[2]</sup> और उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के उसी को पुकारो। जिस

يَبْيَقُ أَدْمَلَاقِتَنَّكُمُ الشَّيْطَانُ كَمَا أَخْرَجَ أَبُوكُلَّمُ  
مِنَ الْجَنَّةِ يَرْجُ عَنْهُمَا لِيَسِمَّا مَالِيَّهُ لَمْسُونَ إِنَّهُ  
يَرْكَمُ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْهُمْ إِنَّا جَعَلْنَا  
الشَّيْطَانَ أَوْلِيَاءً لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ<sup>④</sup>

وَإِذَا قَعَلُوا فَأَحْشَأُهُمْ فَلَوْا وَجَدُنَا عَلَيْهَا أَلَامَنَا وَاللهُ  
أَمْرَنَا بِهَا فَلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْحَسَنَاتِ أَنْفَلَوْنَ  
عَلَى النَّاسِ مَا لَا يَعْلَمُونَ<sup>⑤</sup>

فُلْ أَمْرَرَتِي بِالْقُسْطِ وَأَقْيَمْوْا وَجُوهَكُمْ عِنْدَ  
كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوْهُ فُلْ صَبِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ هَذِهِ  
كَمَابَدَ الْكُلُّ تَعُودُونَ<sup>٦</sup>

1 तथा उस के आज्ञाकारी एवं कृतज्ञ बनें।

2 इस आयत में सत्य धर्म के निम्नलिखित तीन मूल नियम बताये गये हैं:  
कर्म में संतुलन,  
बंदना में अल्लाह की ओर ध्यान,  
तथा धर्म में विशुद्धता तथा एक अल्लाह की बंदना करना।

प्रकार उस ने तुम्हें पहले पैदा किया है उसी प्रकार (प्रलय में) फिर जीवित कर दिये जाओगे।

30. एक समुदाय को उस ने सुपथ दिखा दिया और दूसरा समुदाय कुपथ पर स्थित रह गया। वास्तव में इन लोगों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को सहायक बना लिया, फिर भी वह समझते हैं कि वास्तव में वही सुपथ पर हैं।

31. हे आदम के पुत्रो! प्रत्येक मस्जिद के पास (नमाज के समय) अपनी शोभा धारण करो<sup>[1]</sup>, तथा खाओ और पीओ और बेजा खर्च न करो। वस्तुतः वह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

32. (हे नबी!) इन (मिश्रणवादियों) से कहिये कि किस ने अल्लाह की उस शोभा को हराम (वर्जित) किया है<sup>[2]</sup> जिसे उस ने अपने सेवकों के लिये निकाला है? तथा स्वच्छ जीविकाओं को? आप कह दें: यह संसारिक जीवन में उन के लिये (उचित) है, जो ईमान लाये तथा प्रलय के दिन (उन्हीं के लिये) विशेष<sup>[3]</sup> है। इसी प्रकार हम

فِيْ إِيمَانِهِمْ وَقَوْنَىْ أَحَقُّ عَلَيْهِمُ الصَّلَةُ  
إِنَّهُمْ أَنْعَدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّمَا مِنْ دُونِ  
اللَّهِ وَيَسْبُّونَ أَنَّهُمْ مُهَمَّدُونَ ⑤

يَذْكُرُ أَدْمَحُدُوا زِينَتَهُ عَنْدَهُمْ مَسْجِدٌ وَكُلُّوا  
وَأَشْرَبُوا وَلَا تُرْقُوا إِنَّهُ لَكَبُرُ الْمُنْكَرُ فِيْ

فُلُّ مَنْ حَرَمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادَهُ وَالظَّبَابِ  
مِنَ الرِّزْقِ فُلُّ هِيَ لِلَّذِينَ امْتُوا فِي الْحَيَاةِ  
الْدُّنْيَا خَالِصَةٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كُلُّ ذَلِكَ تُفَضِّلُ الْأَيِّ  
لِلْيَوْمِ يَعْلَمُونَ ⑥

1 कुरैश नगन होकर कॉबा की परिक्रमा करते थे। इसी पर यह आयत उतरी।

2 इस आयत में सन्यास का खण्डन किया गया है कि जीवन के सुखों तथा शोभाओं से लाभान्वित होना धर्म के विरुद्ध नहीं है। इन सब से लाभान्वित होने में ही अल्लाह की प्रसन्नता है। नगन रहना तथा संसारिक सुखों से वंचित हो जाना सत्यर्थ नहीं है। धर्म की यह शिक्षा है कि अपनी शोभाओं से सुसज्जित हो कर अल्लाह की वंदना और उपासना करो।

3 एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमर (रजियल्लाहु अन्हु) से

अपनी आयतों का सविस्तार वर्णन उन के लिये करते हैं जो ज्ञान रखते हों।

33. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने तो केवल खुले तथा छुपे कुकर्मा और पाप तथा अवैध विद्रोह को ही हराम (वर्जित) किया है, तथा इस बात को कि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाओ जिस का कोई तर्क उस ने नहीं उतारा है तथा अल्लाह पर ऐसी बात बोलो जिसे तुम नहीं जानते।

34. प्रत्येक समुदाय का<sup>[1]</sup> एक निर्धारित समय है, फिर जब वह समय आ जायेगा तो क्षण भर देर या सवेर नहीं होगी।

35. हे आदम के पुत्रो! जब तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आ जायें जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो डरेगा और अपना सुधार कर लेगा तो उस के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह<sup>[2]</sup> उदासीन होंगे।

36. और जो हमारी आयतें झुठलायेंगे और उन से घमंड करेंगे वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।

37. फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन

कहा: क्या तुम प्रसन्न नहीं हो कि संसार काफिरों के लिये हो और परलोक हमारे लिये? (बुखारी- 2468 , मुस्लिम- 1479)

1 अर्थात् काफिर समुदाय की यातना के लिये।

2 इस आयत में मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये समय समय पर रसूलों के आने के बारे में सूचित किया गया है और बताया जा रहा है कि अब इसी नियमानुसार अंतिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम आ गये हैं। अतः उन की बात मान लो, अन्यथा इस का परिणाम स्वयं तुम्हारे सामने आ जायेगा।

فُلِ إِنَّا حَمَرَيْتِ الْفُوَاجِشَ مَا ظَهَرَ فِيهَا وَمَا بَطَّنَ  
وَإِنَّمَا وَالْبَقَاعِ بِغَيْرِ الْعَيْنِ وَإِنْ تُشْرِكُوا بِاللهِ مَا لَمْ  
يُنْزِلْ بِهِ سُلْطَانًا قَوْنَ تَقْوَنَا عَلَى اللَّهِ مَا لَا يَعْلَمُونَ

وَلِكُلِّ أُنْوَنْ أَجْلٌ فَإِذَا جَاءَهُمْ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ  
سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْبِلُونَ

يَنْهَى أَدَمَ إِنَّمَا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقْصُدُونَ عَلَيْكُمْ  
إِنَّمَا فَمَنْ أَتَقْرَبَ وَأَصْلَمَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ  
يَعْزَزُونَ

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَئِكَ  
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا لَخِلْدُونَ

فَعَنْ أَظْلَكِهِمْ إِنْ أُفْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَبَ

है जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाये अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? उन को उन के भाग्य में लिखा भाग मिल जायेगा। यहाँ तक कि जिस समय हमारे फ़रिश्ते उन का प्राण निकालने के लिये आयेंगे तो उन से कहेंगे कि वह कहाँ हैं जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह कहेंगे कि वह तो हम से खो गये, तथा अपने ही विरुद्ध साक्षी (गवाह) बन जायेंगे कि वस्तुतः वह काफिर थे।

38. अल्लाह का आदेश होगा कि तुम भी प्रवेश कर जाओ उन समुदायों में जो तुम से पहले के जिन्हों और मनुष्यों में से नरक में हैं। जब भी कोई समुदाय (नरक में) प्रवेश करेगा तो अपने समान दूसरे समुदाय को धिक्कार करेगा, यहाँ तक कि जब उस में सब एकत्र हो जायेंगे तो उन का पिछला अपने पहले के लिये कहेगा: हे हमारे पालनहार इन्हों ने ही हमें कुपथ किया है। अतः इन्हें दुगनी यातना दो। वह (अल्लाह) कहेगा तुम में से प्रत्येक के लिये दुगनी यातना है, परन्तु तुम्हें ज्ञान नहीं।

39. तथा उन का पहला समुदाय अपने दूसरे समुदाय से कहेगा: (यदि हम दौषिथे) तो हम पर तुम्हारी कोई प्रधानता नहीं<sup>[1]</sup> हुई, तो तुम अपने

بِأَيْنِهِ أُولَئِكَ يَنَالُهُمْ تَوْسِيهِمْ مِنَ الْكِتَابِ  
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا هُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّهُمْ لَعَلَّا  
أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَاتِلُوا  
صَلُّوا عَلَيْنَا وَشَهَدُوا عَلَىٰ أَنَّقُسْهُمْ أَمْ حَانُوا  
كُفَّارٌ<sup>®</sup>

قَالَ ادْخُلُوا فِي أَمْمِهِ قَدْ خَلَقْتُ مِنْ تَبِيلَكُمْ مِنَ الْجِنِّ  
وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلُّمَا دَخَلْتُ أَمْمَةً لَعَنْتُ الْخَتَمَ  
حَتَّىٰ إِذَا لَرَأَوْهُمْ هَا جَيْبِيْعًا قَالَتْ أُخْرَيُهُمْ  
لَا إِلَهُ مِمْ رَبَّنَا هُوَ لَا أَصْلُوْنَا فَإِنَّمَا عَذَابَ أَضْعَفُنَا  
مِنَ النَّارِ ذَهَبَ قَالَ لِكُلِّ ضُعْفٍ وَلِكُلِّ أَعْلَمُونَ<sup>®</sup>

وَقَالَتْ أُولَئِكُمْ لِأَخْرَيِهِمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا  
مِنْ فَضْلٍ فَدُؤُلُوْنَ الْعَذَابَ بِهَا كُلُّمَا  
تَكْسِبُونَ<sup>٩</sup>

<sup>1</sup> और हम और तुम यातना में बराबर हैं। आयत में इस तथ्य की ओर संकेत है कि कोई समुदाय कुपथ होता है तो वह स्वयं कुपथ नहीं होता, वह दूसरों को भी अपने कुचरित्र से कुपथ करता है अतः सभी दुगनी यातना के अधिकारी हुये।

कुकर्मा की यातना का स्वाद लो।

40. वास्तव में जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठला दिया और उन से अभिमान किया उन के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, जब तक<sup>[1]</sup> ऊँट सूई के नाके से पार न हो जाये। और हम इसी प्रकार अपराधियों को बदला देते हैं।

41. उन्हीं के लिये नरक का बिछौना और उन के ऊपर से ओढ़ना होगा। और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिकार (बदला)<sup>[2]</sup> देते हैं।

42. और जो ईमान लाये और सत्कर्म किये, और हम किसी पर उस की सकत से (अधिक) भार नहीं रखते। वही स्वर्गी हैं और वही उस में सदावासी होंगे।

43. तथा उन के दिलों में जो द्वोष होगा उसे हम निकाल देंगे।<sup>[3]</sup> उन (स्वर्गी में) नहरें बहती होंगी तथा वह कहेंगे कि उस अल्लाह की प्रशंसा है जिस ने हमें इस की राह दिखाई और यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन न देता तो हमें मार्गदर्शन न मिलता। हमारे पालनहार के रसूल सत्य ले कर आये, तथा उन्हें पुकारा जायेगा कि

1 अर्थात् उन का स्वर्ग में प्रवेश असंभव होगा।

2 अर्थात् उन के कुकर्मा तथा अत्याचारों का।

3 स्वर्गीयों को सब प्रकार के सुख, सुविधा के साथ यह भी बड़ी नेमत मिलेगी कि उन के दिलों का बैर निकाल दिया जायेगा, ताकि स्वर्ग में मित्र बन कर रहे। क्योंकि आपस के बैर से सब सुख किरकिरा हो जाता है।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَأَسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَمْ يَفْلُحُوا بِأَبْوَابِ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلْجُوَ الْجَهَنَّمُ فِي سَعَةِ الْجَهَنَّمِ وَكَذَلِكَ يَعْمَلُ الْمُجْرِمُونَ ①

لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ وَهَادُوهُ مِنْ قَوْمٍ عَوَّاشِ ۖ وَكَذِلِكَ يَعْزِزُ الظَّالِمِينَ ②

وَالَّذِينَ أَمْنَوْا وَعَمِلُوا الصِّلَاةَ لَا يُكَلِّفُنَّ نَفْسًا إِلَّا وَسَعَهَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَلِيدُونَ ③

وَنَزَّلْنَا مَنَّا فِي صُدُورِ رِهْبَعِينَ غَلَى تَجْرِي مِنْ حَقِيرِمُ الْأَنْهَرِ وَقَالَ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَنَا لِهَذَا وَمَا كَانَ الْمُهَمْتَدُوْيَ لَوْلَا أَنْ هَدَسَ اللَّهُ أَنَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْغُنَّى وَنَوْدُوا أَنْ يَلْكُمُ الْجَنَّةَ أُولَئِكُمْ مُّهَمْتَدُوْيَ بِمَا كَثُرُ تَعْمَلُونَ ④

इस स्वर्ग के अधिकारी तुम अपने सत्कर्मों के कारण हुये हो।

44. तथा स्वर्गवासी नरकवासियों को पुकारेंगे कि हम को हमारे पालनहार ने जो वचन दिया था उसे हम ने सच्च पाया, तो क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें जो वचन दिया था उसे तुम ने सच्च पाया? वह कहेंगे कि हाँ। फिर उन के बीच एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अल्लाह की धिक्कार है उन अत्याचारियों पर
45. जो लोगों को अल्लाह की राह (सत्धर्म) से रोकते तथा उसे टेढ़ा करना चाहते थे। और वही परलोक के प्रति अविश्वास नहीं रखते थे।
46. और दोनों (नरक तथा स्वर्ग) के बीच एक पर्दा होगा और कुछ लोग आराफ़<sup>[1]</sup> (ऊँचाईयों) पर होंगे। जो प्रत्येक को उन के लक्षणों से पहचानेंगे और स्वर्ग वासियों को पुकार कर उन्हें सलाम करेंगे। और उन्होंने उस में प्रवेश नहीं किया होगा, परन्तु उस की आशा रखते होंगे।
47. और जब उन की आँखें नरक वासियों की ओर फिरेंगी तो कहेंगे: हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।
48. फिर आराफ़ (ऊँचाईयों) के लोग

<sup>1</sup> आराफ़ नरक तथा स्वर्ग के मध्य एक दीवार है जिस पर वह लोग रहेंगे जिन के सुकर्म और कुकर्म बराबर होंगे। और वह अल्लाह की दया से स्वर्ग में प्रवेश की आशा रखते होंगे। (इन्हे कसीर)

وَنَادَى أَصْحَابُ الْجَنَّةَ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قُدْمَكُلَّا مَا وَعَدْنَا رَبِّنَا حَقَّا نَهَلْ وَجَدْ تُوَاعَدْ رَبِّكُلُّ حَقًا لَّوْلَاعَمْ، فَإِذْنَ مُؤْذَنْ بَيْنَهُمْ أَنْ لُعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٦﴾

الَّذِينَ يَصْدُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَعْتَذِرُونَ عَوْجًا وَهُمْ بِالْكُفْرِ كَفُرُونَ ﴿٦﴾

وَبَيْنَهُمْ مَا جَاءَ وَعَلَى الْأَعْرَافِ بِرَجَالٍ يَعْرُفُونَ كُلَّ أَيْمَانٍ وَنَادَوا أَصْحَابَ الْجَنَّةَ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَوْلَدُ خُلُوفَاهُمْ يَطْعَمُونَ ﴿٦﴾

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تَلَقَّأَ أَصْحَابُ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦﴾

وَنَادَى أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ بِرَجَالٍ يَعْرُفُونَهُمْ

कुछ लोगों को उन के लक्षणों से पहचान जायेगे<sup>[1]</sup>, उन से कहेंगे कि तुम्हारे जत्थे और तुम्हारा घमंड तुम्हारे किसी काम नहीं आया।

49. (और स्वर्गवासियों की ओर संकेत करेंगे कि) क्या यही वह लोग नहीं हैं जिन के सम्बंध में तुम शपथ ले कर कह रहे थे कि अल्लाह इन्हें अपनी दया में से कुछ नहीं देगा? (आज उन से कहा जा रहा है कि) स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ, न तुम पर किसी प्रकार का भय है और न तुम उदासीन होगे।

50. तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे कि हम पर तनिक पानी डाल दो, अथवा जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उस में से कुछ दे दो। वह कहेंगे कि अल्लाह ने यह दोनों (आज) काफिरों के लिये हराम (वर्जित) कर दिया है।

51. (उस का निर्णय है कि) जिन्हों ने अपने धर्म को तमाशा और खेल बना लिया था, तथा जिन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा था, तो आज हम उन्हें ऐसे ही भुला देंगे जिस प्रकार उन्होंने आज के दिन के आने को भुला दिया था<sup>[2]</sup> और इस लिये भी कि वह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
قَالُوا مَا أَغْنَى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَنْذِلُونَ  
ۚ

أَهْلَهُ الَّذِينَ أَقْسَمُوكُمْ لَأَيْنَ الْهُرْمَانُ  
أَدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خُوفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا إِنْذِرَنَّا  
ۚ

وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِضُّوا  
عَلَيْنَا مِنَ الْمَلَأِ أَقْرَبَ رَزْقَنَا اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ  
حَرَمَهُمْ مَا عَلَى الْكُفَّارِ  
ۖ

الَّذِينَ أَعْذَدْنَا دِينَهُمْ لَهُمْ أَعْبُدُهُمْ وَعَزَّزَهُمْ  
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فَإِلَيْهِمْ نَنْسِمُ كَمَا نَسِيَ الْعَادَيْرُومُ  
هَذَا أَوْمَانِي لَوْا بِإِيمَانِنَا بِجَهَنَّمِ  
ۖ

1. जिन को संसार में पहचानते थे और याद दिलायेंगे कि जिस पर तुम्हें घमंड था आज तुम्हारे काम नहीं आया।

2. नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: प्रलय के दिन अल्लाह ऐसे बंदों से कहेगा: क्या मैं ने तुम्हें बीबी-बच्चे नहीं दिये, आदर-मान नहीं दिया? क्या ऊँट-

हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

52. जब कि हम ने उन के लिये एक ऐसी पुस्तक दी जिसे हम ने ज्ञान के आधार पर सविस्तार वर्णित कर दिया है जो मार्गदर्शन तथा दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।
53. (फिर) क्या वह इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि इस का परिणाम सामने आ जाये? जिस दिन इस का परिणाम आ जायेगा तो वही जो इस से पहले इसे भूले हुये थे कहेंगे कि हमारे पालनहार के रसूल सच्च ले कर आये थे, (परन्तु हम ने नहीं माना) तो क्या हमारे लिये कोई अनुशंसक (सिफारशी) है, जो हमारी अनुशंसा (सिफारिश) करे? अथवा हम संसार में फेर दिये जायें तो जो कर्म हम करते रहे उन के विपरीत कर्म करेंगे! उन्होंने स्वयं को क्षति में डाल दिया, तथा उन से जो मिथ्या बातें बना रहे थे खो गईं।
54. तू म्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस ने आकाशों तथा धरती को छः दिनों में बनाया<sup>[1]</sup>, फिर अर्श

घोड़े तेरे आधीन नहीं किये, क्या तू मुख्या बन कर चुंगी नहीं लेता था? वह कहेगा: हे अल्लाह सब सहीह है। अल्लाह प्रश्न करेगा: क्या मुझ से मिलने की आशा रखता था? वह कहेगा: नहीं। अल्लाह कहेगा जैसे तू मुझे भूला रहा, आज मैं तुझे भूल जाता हूँ। (सहीह मुस्लिम- 2968)

1 यह छः दिन शनिवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, और बृहस्पतिवार हैं। पहले दो दिन में धरती को, फिर आकाश को बनाया, फिर आकाश को दो दिन में बराबर किया, फिर धरती को फैलाया और उस में पर्वत, पानी और

وَلَقَدْ جَنَّتُهُمْ بِكِتَابٍ فَصَلَّيْهُ عَلَى عَلِيٍّ هُدًى  
وَرَاحِمَةٌ لِّلْعَوْمَىٰ وَبِنُونَ<sup>®</sup>

هُلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْتِيَهُمْ يَوْمَ يَأْتِيُهُمْ  
يَقُولُ الَّذِينَ سَوْفَ مِنْ قَبْلِ قَدْجَادَتْ رُسُلٌ  
رَّيْدَا بِالْحَقِّ فَهُلْ لَنَامِنْ شُفَعَاءَ فَيُشْفَعُوا إِلَيْهِ  
أَوْرَدَ فَعَمَلَ غَيْرَالَّهِيُّ كُنْ لَعْمَلَ قَدْ خَرُوا  
أَنْفُسُهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْرَرُونَ<sup>٦</sup>

إِنَّ رَبَّكُلَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ  
فِي سَيَّرَةِ أَكَلَهُمْ لَهُمْ أَسْوَى عَلَى الْعَرْشِ يَعْشِي الْأَئِمَّةَ

(सिंहासन) पर स्थित हो गया। वह रात्रि से दिन को ढक देता है, दिन उस के पीछे दौड़ता हुआ आ जाता है, सूर्य तथा चाँद और तारे उस की आज्ञा के अधीन हैं। सुन लो! वही उत्पत्तिकार है, और वही शासक<sup>[1]</sup> है। वही अल्लाह अति शुभ, संसार का पालनहार है।

55. तुम अपने (उसी) पालनहार को रोते हुये तथा धीरे-धीरे पुकारो। निःसदैह वह सीमा पार करने वालों से प्रेम नहीं करता।

56. तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात्<sup>[2]</sup> उपद्रव न करो, और उसी से डरते हुये, तथा आशा रखते हुये<sup>[3]</sup> प्रार्थना करो। वास्तव में अल्लाह की दया सदाचारियों के समीप है।

57. और वही है जो अपनी दया (वर्षा) से पहले वायुओं को (वर्षा) की शुभ सूचना देने के लिये भेजता है। और जब वह भारी बादलों को लिये उड़ती है तो हम उसे किसी निर्जीव धरती को (जीवित) करने के लिये पहुँचा देते हैं, फिर उस से जल वर्षा कर के उस के द्वारा प्रत्येक प्रकार के फल उपजा देते हैं। इसी प्रकार हम

उपज की व्यवस्था दो दिन में की। इस प्रकार यह कुल छः दिन हुये। (देखिये: सूरह सज्दा, आयत- 9, 10)

1 अर्थात् इस विश्व की व्यवस्था का अधिकार उस के सिवा किसी को नहीं है।

2 अर्थात् सत्यर्थ और रसूलों द्वारा सुधार किये जाने के पश्चात्।

3 अर्थात् पापाचार से डरते और उस की दया की आशा रखते हुये।

النَّهَارِ يَطْلُبُهُ حَيْثُمَا وَالشَّمْسَ وَالقَمَرُ وَالْجَوَمُ  
مُسْخَرٌ بِأَمْرِهِ أَلَّا لِهِ الْخُلُقُ وَالْأَمْرُ بِرَبِّ الْأَنْوَارِ  
رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑤

أَدْعُوكَمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّكَ لَا تُحِبُّ  
الْمُعْتَدِلِينَ ⑥

وَلَا تُقْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ  
خَوْفًا وَطَمَعاً إِنَّ رَحْمَةَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ  
الْمُحْسِنِينَ ⑦

وَهُوَ الَّذِي يُرِسِّلُ الرِّيحَ بُشْرَابَيْنَ يَدِيْ  
رَحْمَتِهِ حَتَّى إِذَا أَقْلَمَ مَحَابِيْنَ لِأَسْقَنَهُ  
لِبَلَّدِيْ مَيْتَ فَأَنْزَلَنَا يَوْمَ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا  
مِنْ كُلِّ الشَّمَرِ كَذَلِكَ نُخْرِجُ النَّوْمَ  
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ⑧

मुर्दों को जीवित करते हैं, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण कर सको।

58. और स्वच्छ भूमि अपनी उपज अल्लाह की अनुमति से भरपूर देती है। तथा ख़राब भूमि की उपज थोड़ी ही होती है। इसी प्रकार हम अपनी<sup>[1]</sup> आयतें (निशानियाँ) उन के लिये दुहराते हैं जो शुक्र अदा करते हैं।
59. हम ने नूह<sup>[2]</sup> को उस की जाति की ओर (अपना संदेश पहुँचाने के लिये) भेजा था, तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! (केवल) अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।
60. उस की जाति के प्रमुखों ने कहा: हमें

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَحْرُجُ نَبَاتَهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ  
وَالَّذِي خَبَثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَجَدَ أَكْذَالَكَ  
نُصَرَفُ الْأَلْيَتْ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ<sup>①</sup>

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمٍ فَقَالَ يَقُولُ  
أَعْبُدُ وَاللَّهُ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٌ إِلَّا أَنْتُ  
عَلَيْكُمْ عِدَابٌ يَوْمٌ عَظِيمٌ<sup>②</sup>

قَالَ الْمُلَائِكَةُ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ  
مَنْ فِي الْأَرْضِ فَلَمَّا فَتَاهُ مُوسَىٰ<sup>③</sup>

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मुझे अल्लाह ने जिस मार्ग दर्शन और ज्ञान के साथ भेजा है वह उस वर्षा के समान है जो किसी भूमि में हूँड़ा तो उस का कुछ भाग अच्छा था जिस ने पानी लिया और उस से बहुत सी घास और चारा उगाया। और कुछ कड़ा था जिस ने पानी रोक लिया तो लोगों को लाभ हुआ और उस से पिया और सीचा। और कुछ चिकना था, जिस ने न पानी रोका न घास उपजाई। तो यही उस की दशा है जिस ने अल्लाह के धर्म को समझा और उसे सीखा तथा सिखाया। और उस की जिस ने उस पर ध्यान ही नहीं दिया और न अल्लाह के मार्गदर्शन को स्वीकार किया जिस के साथ मुझे भेजा गया है। (सहीह बुखारी-79)

2 बताया जाता है कि नूह (अलैहिस्सलाम) प्रथम मनु आदम (अलैहिस्सलाम) के दसवें वंश में थे। उन से कुछ पहले तक लोग इस्लाम पर चले आ रहे थे। फिर अपने धर्म से फिर गये और अपने पुनीत पूर्वजों की मर्तियाँ बना कर पूजने लगे। तब अल्लाह ने नूह को भेजा। किन्तु कुछ के सिवा किसी ने उन की बात नहीं मानी। अन्ततः सब डुबो दिये गये। फिर नूह के तीन पुत्रों से मानव वंश चला इसी लिये उन को दूसरा आदम भी कहा जाता है। (देखिये सूरह नूह, आयत: 71)

لगता है कि तुम खुले कुपथ में पड़ गये हो।

61. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मैं किसी कुपथ में नहीं हूँ। परन्तु मैं विश्व के पालनहार का रसूल हूँ।
62. तुम्हें अपने पालनहार का सदेश पहुँचा रहा हूँ और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और अल्लाह की ओर से उन चीजों का ज्ञान रखता हूँ जिन का ज्ञान तुम्हें नहीं है।
63. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है, ताकि वह तुम्हें सावधान करे, और ताकि तुम आज्ञाकारी बनो और अल्लाह की दया के योग्य हो जाओ??
64. फिर भी उन्होंने उस को झुठला दिया। तो हम ने उसे और जो नौका में उस के साथ थे उन को बचा लिया। और उन्हें डुबो दिया जो हमारी आयतों को झुठला चुके थे। वास्तव में वह (समझ बूझ के) अँधे थे।
65. (और इसी प्रकार) आद<sup>[1]</sup> की ओर उन के भाई हूद को (भेजा)। उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या तुम (उस की अवैज्ञा से) नहीं डरते?

قَالَ يَقُولُ مَنِ لَيْسَ بِنِ صَلَّهُ وَلِكَيْ رَسُولُنِ  
رَبِّ الْعَالَمِينَ ①

أَبْلَغْتُمْ رِسْلَتِ رَبِّنِ وَأَضْحَيْتُكُمْ وَأَعْلَمْتُمْ مِنَ اللَّهِ  
مَا لَا يَعْلَمُونَ ②

أَوْ عَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذُكْرُنِ رَبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ  
مُّنْكَرٍ لِمَنْدِرَكُمْ وَلَتَتَفَوَّأْ لَعْلَمْ  
رُحْمَمُونَ ③

فَلَذْ بُوْهَ فَأَبْعَيْنَهُ وَلَذْ بُوْهَ مَعَهُ فِي الْفَلَذِ  
وَأَغْرَقْنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا يَا لَيْتَ إِنَّهُمْ كَانُوا  
قَوْمًا لَّا يَعْيَمُونَ ④

وَلَإِنْ عَلِيْ عَلِيْ أَخَاهُمْ هُوَ دَا قَالَ يَقُولُ أَعْبُدُ دَا  
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ رَبِّنِ غَيْرَهُ أَفَلَا تَتَسَعُونَ ⑤

1 نूह की जाति के पश्चात् अरब में आद जाति का उत्थान हुआ। जिस का निवास स्थान अहकाफ का क्षेत्र था। जो हिजाज तथा यमामा के बीच स्थित है। उन की आबादियाँ उमान से हज़रमौत और ईराक तक फैली हुई थीं।

66. (इस पर) उस की जाति में से उन प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये कि हमें ऐसा लग रहा है कि तुम ना समझ हो गये हो। और वास्तव में हम तुम्हें झुठों में समझ रहे हैं।
67. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मुझ में कोई ना समझी की बात नहीं है परन्तु मैं तो संसार के पालनहार का रसूल (सदेशवाहक) हूँ।
68. मैं तुम्हें अपने पालनहार का सदेश पहुँचा रहा हूँ और वास्तव में मैं तुम्हारा भरोसा करने योग्य शिक्षक हूँ।
69. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है ताकि वह तुम्हें सावधान करे। तथा याद करो कि अल्लाह ने नूह की जाति के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है, और तुम्हें अधिक शारीरिक बल दिया है। अतः अल्लाह के पुरस्कारों को याद<sup>[1]</sup> करो। संभवतः तुम सफल हो जाओगे।
70. उन्हों ने कहा: क्या तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि हम केवल एक ही अल्लाह की इबादत (वंदना) करें और उन्हें छोड़ दें जिन की पूजा हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं। तो वह बात हमारे पास ला दो जिस से हमें डरा रहे हो, यदि तुम सच्चे हो?
71. उस ने कहा: तुम पर तुम्हारे

قَالَ الْمُلَائِكَةِ إِنَّ كُفَّارًا مِّنْ قَوْمِهِ أَنَا  
لَرَبِّكَ فِي سَفَاهَةٍ وَلَا إِنَّ الظَّنِّكَ مِنَ  
الْكَاذِبِينَ<sup>④</sup>

قَالَ يَقُولُ لَئِسَ إِنِّي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ  
مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ<sup>⑤</sup>

أَبْلَغُكُمْ رِسْلِي رَبِّي وَإِنَّ الْكُفَّارَ تَاصِحُّ أَمْيَانٌ<sup>⑥</sup>

أَوْجَبْنَا أَنْ جَاءَكُمْ ذُكْرُنِي رَبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ  
مِّنْكُمْ لِيُذْعِنَ رَبَّكُمْ وَإِذَا كُرِّزَ إِذْ جَعَلْتُمْ خُلُقَكُمْ  
مِّنْ بَعْدِ قَوْمٍ نُوَجَّهُ وَرَأَدَ كُفُّرَ فِي الْغَلْقُ  
بَخْطَةً هُنَّا ذُكْرُوا إِذَا لَمْ يَعْلَمُوا فَلَمْ يُؤْمِنُونَ<sup>⑦</sup>

قَالُوا إِنَّمَا تَنْعِيدُ اللَّهَ وَهُدَاهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ  
يَعْبُدُ أَيُّ أُولَئِكَ قَاتَلَهُمْ أَتَيْدُ نَأْنَى لِنُكَفِّرَ  
مِنَ الضَّرِّيْقِينَ<sup>⑧</sup>

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَبِّكُمْ رُجُسٌ

1 अर्थात् उस के आज्ञाकारी तथा कृतज्ञ बनो।

पालनहार का प्रकोप और क्रोध  
आ पड़ा है। क्या तुम मूँझ से कुछ  
(मूर्तियों के) नामों के विषय में विवाद  
कर रहे हो जिन का तुम ने तथा  
तुम्हारे पूर्वजों ने (पूज्य) नाम रख  
दिया है। जिस का कोई तर्क (प्रमाण)  
अल्लाह ने नहीं उतारा है? तो तुम  
(प्रकोप की) प्रतीक्षा करो और तुम्हारे  
साथ मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

72. फिर हम ने उसे और उस के  
साथियों को बचा लिया। तथा उन की  
जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों  
(आदेशों) को झुठला दिया था। और  
वह ईमान लाने वाले नहीं थे।

73. और (इसी प्रकार) समूद<sup>[1]</sup> (जाति) के  
पास उन के भाई सालेह को भेजा।  
उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की  
(वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा  
कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे  
पालनहार की ओर से खुला प्रमाण  
(चमत्कार) आ गया है। यह अल्लाह  
की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक चमत्कार<sup>[2]</sup>  
है। अतः इसे अल्लाह की धरती में चरने  
के लिये छोड़ दो और इसे बुरे विचार  
से हाथ न लगाना, अन्यथा तुम्हें  
दुखदायी यातना घेर लेगी।

وَغَضِبَ أَجْجَادُ لَوْئَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمِيتُهَا  
أَنْتُمْ وَابْنُكُمْ مَا تَرَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَنٍ  
فَانْتَظِرُوا إِلَىٰ مَعْلُومٍ مِّنَ الْمُنْتَظَرِينَ<sup>①</sup>

فَأَجْبَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةِ مِنْنَا  
وَقَطَعْنَا دِرَارَ الَّذِينَ كَذَّبُوا يَا يَتَّبِعُونَا وَمَا كَانُوا  
مُؤْمِنِينَ<sup>②</sup>

وَإِلَىٰ شَمُودٍ أَخَاهُ صِلْحَانِ قَالَ يَقُولُ  
أَعْبُدُ وَاللَّهُ مَا لَكُمْ مِّنَ الرُّؤْيَا قَدْ  
جَاءَكُمْ بِنَتِنَةٍ مِّنْ رَّبِيعٍ هَذِهِ نَافَّةٌ  
إِنَّ اللَّهَ لَكُمْ أَيَّهُ فَذَرُوهَا تَأْكُلُ بَقِيَّةَ أَرْضٍ  
إِنَّ اللَّهَ وَلَا تَمْشُوهَا إِلَيْهِ فَيَا خَذْلَمَ عَذَابٍ  
أَلِيمٍ<sup>③</sup>

1 समूद जाति अरब के उस क्षेत्र में रहती थी जो हिजाज़ तथा शाम के बीच «वादिये-कुर» तक चला गया है। जिस को आज (( अल उला )) कहते हैं। इसी को दूसरे स्थान पर «अलहिज़» भी कहा गया है।

2 समूद जाति ने अपने नबी सालेह अलैहिस्सलाम से यह माँग की थी कि: पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दें। और सालेह अलैहिस्सलाम की प्रार्थना से अल्लाह ने उन की यह माँग पूरी कर दी। (इब्ने कसीर)

74. तथा याद करो कि अल्लाह ने आद जाति के ध्वस्त किये जाने के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम्हें धरती में बसाया है, तुम उस के मैदानों में भवन बनाते हो और पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो। अतः अल्लाह के उपकारों को याद करो और धरती में उपद्रव करते न फिरो।
75. उस की जाति के घमंडी प्रमुखों ने उन निर्बलों से कहा जो उन में से ईमान लाये थे: क्या तुम विश्वास रखते हो कि सालेह अपने पालनहार का भेजा हुआ है? उन्होंने कहा: निश्चय जिस (सदेश) के साथ वह भेजा गया है हम उस पर ईमान (विश्वास) रखते हैं।
76. (तो इस पर) घमंडियों<sup>[1]</sup> ने कहा: हम तो जिस का तुम ने विश्वास किया है उसे नहीं मानते।
77. फिर उन्होंने ऊँटनी को बध कर दिया और अपने पालनहार के आदेश का उल्लंघन किया और कहा: हे सालेह! तू हमें जिस (यातना) की धमकी दे रहा था उसे ला दे, यदि तू वास्तव में रसूलों में से है।
78. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया। फिर जब भौर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।
79. तो सालेह ने उन से मैंह फेर लिया और

وَإِذْ كَرُوا لَذِ جَعَلَهُمْ حَلَقَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ  
وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَنْخِذُونَ مِنْ  
سُهُولِهَا صُورًا وَتَسْجُنُونَ الْجِبَالَ بِيُونَ  
فَإِذْ كَرُوا إِلَهُ الْأَنْهَوْ لَا تَعْوَافِي الْأَرْضِ  
مُفْسِدِينَ ①

قَالَ الْمَلَائِكَةُ إِنَّكُمْ رُوَا مِنْ قَوْمٍ  
لِلَّذِينَ اسْتَضْعَفُوا إِنَّمَا مِنْهُمْ أَعْلَمُونَ  
أَنَّ صَلِحًا مُرْسَلٌ مِنْ رَبِّهِ قَاتِلًا إِنَّمَا  
أَرْسَلَ يَهُ مُؤْمِنُونَ ②

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِأَنْذِنِ  
أَمْشَكْنَا يَهُ كُفَّارُونَ ③

فَعَقَرُوا الْئَاقَةَ وَغَتَّوْا غَنَمَ امْرُرَتِهِمْ  
وَقَاتَلُوا يَصْلُحُ اثْتَنَانِيَمَا تَعْدُنَاهُنَّ  
كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ④

فَلَخَدَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاصْبَعُوا فِي دَارِهِمْ  
جِيشِينَ ⑤

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ وَقَالَ يَقُولُمْ لَقَدْ أَنْكَفْتُكُمْ

1 अर्थात् अपने संसारिक सुखों के कारण अपने बड़े होने का गर्व था।

کہا: ہے میری جاتی! مैں نے تुमھें اپنے پالنہاڑ کے عپادش پہنچا دیयے�ے اور مैں نے تੁਮਹਾਰਾ ਭਲਾ ਚਾਹਾ। ਪਰਨਤੁ ਤੁਮ ਉਪਕਾਰੀਯਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰੇਮ ਨਹੀਂ ਕਰਤੇ।

80. ਔਰ ਹਮ ਨੇ ਲੂਤ<sup>[1]</sup> ਕੋ ਭੇਜਾ। ਜਬ ਉਸ ਨੇ ਅਪਨੀ ਜਾਤੀ ਦੇ ਕਹਾ: ਕਿਆ ਤੁਮ ਐਸੀ ਨਿਰਲੰਝਾ ਕਾ ਕਾਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋ ਜੋ ਤੁਮ ਦੇ ਪਹਲੇ ਸੰਸਾਰਵਾਸਿਧਾਂ ਮੈਂ ਦੇ ਕਿਸੀ ਨੇ ਨਹੀਂ ਕਿਯਾ ਹੈ?
81. ਤੁਮ ਸ਼ਿਵਿਆਂ ਦੇ ਛੋਡ ਕਰ ਕਾਮਵਾਸਨਾ ਦੀ ਪੂਰ੍ਤੀ ਦੇ ਲਿਯੇ ਪੁਰਖਿਆਂ ਦੇ ਪਾਸ ਜਾਤੇ ਹੋ? ਬੇਲਿਕ ਤੁਮ ਸੀਮਾ ਲਾਂਘਨੇ ਵਾਲੀ ਜਾਤੀ<sup>[2]</sup> ਹੋ।
82. ਔਰ ਉਸ ਦੀ ਜਾਤੀ ਦੇ ਉਤਤਰ ਬਸ ਯਹ ਥਾ ਕਿ ਇਨ ਦੇ ਅਪਨੀ ਬਸਤੀ ਦੇ ਨਿਕਾਲ ਦੋ। ਯਹ ਲੋਗ ਅਪਨੇ ਮੈਂ ਬੱਡੇ ਪਵਿਤ੍ਰ ਬਨ ਰਹੇ ਹਨ।
83. ਹਮ ਨੇ ਉਸੇ ਔਰ ਉਸ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਉਸ ਦੀ ਪਤਨੀ ਦੇ ਸਿਵਾ ਬਚਾ ਲਿਆ, ਵਹ ਪੀਛੇ ਰਹ ਜਾਨੇ ਵਾਲੀ ਥੀ।
84. ਔਰ ਹਮ ਨੇ ਉਨ ਦੇ (ਪਤਥਰਾਂ) ਦੀ ਵਰਧਾ ਕਰ ਦੀ। ਤੋ ਦੇਖੋ ਕਿ ਅਪਰਾਧਿਆਂ ਦੇ ਪਰਿਣਾਮ ਕੈਸਾ ਰਹਾ?

- 1 لੂਤ ਅਲੈਹਿਸਲਾਮ ਇਕਾਹੀਮ ਅਲੈਹਿਸਲਾਮ ਦੇ ਭਤੀਜੇ ਥੇ। ਔਰ ਵਹ ਜਿਸ ਜਾਤੀ ਦੇ ਮਾਰਗਦਰਸ਼ਨ ਦੇ ਲਿਯੇ ਭੇਜੇ ਗਏ ਥੇ ਵਹ ਉਸ ਕ्षੇਤਰ ਮੈਂ ਰਹਤੀ ਥੀ ਜਹਾਂ ਅਥ «ਮੂਤ ਸਾਗਰ» ਸਥਿਤ ਹੈ। ਉਸ ਦਾ ਨਾਮ ਭਾਥਕਾਰੀ ਨੇ ਸਦੂਮ ਕਿਹਾ ਹੈ।
- 2 ਲੂਤ ਅਲੈਹਿਸਲਾਮ ਦੀ ਜਾਤੀ ਨੇ ਨਿਰਲੰਝਾ ਔਰ ਬਾਲਮੈਥੁਨ ਦੀ ਕੁਰੀਤਿ ਬਨਾਈ ਥੀ ਜੌ ਮਨੁਥ ਦੇ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਵਿਰੁਦ਼ ਥਾ। ਆਜ ਰਿਸਾਰਚ ਦੇ ਪਤਾ ਚਲਾ ਕਿ ਯਹ ਵਿਭਿੰਨ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਰੋਗਾਂ ਦੀ ਕਾਰਣ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਖੇ ਕਿਵੇਂ ਕਾਰਨ ਹੈ। ਪਰਨਤੁ ਆਜ ਪਸ਼ਿਚਾਮੀ ਦੇਸ਼ ਦੁਕਾਰਾ ਉਸ ਅਂਧਕਾਰ ਦੇ ਯੁਗ ਦੀ ਓਰ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਔਰ ਇਸੇ ਵਿਕਿਤਗਤ ਸ਼ਵਤਤ੍ਰਤਾ ਦੀ ਨਾਮ ਦੇ ਰਖਾ ਹੈ।

رِسَالَةٌ رَّبِّيْ وَصَحُّتْ لَكُمْ وَلِكُنْ لَا يُعْلَمُونَ  
الْتَّصْحِينُ<sup>①</sup>

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِتَوْمَةَ أَتَأْتُونَ النَّاجِشَةَ  
مَاسِبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدِيْنَ الْعَلَمِيْنَ<sup>②</sup>

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهُوَةً مِنْ دُوْنِ  
النِّسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ<sup>③</sup>

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمَهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا  
آخِرُ جُوْهُرٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنَاْسٌ  
يَتَطَهَّرُونَ<sup>④</sup>

فَأَبْيَيْتُهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنْ  
الغُلَمَيْنَ<sup>⑤</sup>

وَمَاطَرُنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَانْظَرْ كَيْفَ كَانَ  
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ<sup>⑥</sup>

85. تथा مَدْيَن<sup>[1]</sup> کی اور ہم نے اُس کے بھائی شُعےِ ب کو رَسُول بنا کر بھیجا۔ اُس نے کہا: ہے میری جاتی کے لوگوں! اُنہاں کی ایجادت (بَنَانَا) کرو، اُس کے سیوا تُمہارا کوئی پُوجی نہیں ہے۔ تُمہارے پاس تُمہارے پالنہاڑ کا خُلَا ترک (پرمایا) آ گیا ہے۔ اُنہاں ناپ اور تُول پری کرو اور لوگوں کی چیزوں میں کمی ن کرو۔ تथا دھرتی میں اُس کے سُدھار کے پشچاٹ عپدھب ن کرو۔ یہی تُمہارے لیے عتیم ہے، یہی تُم ایمان والے ہو۔

86. تथا پ्रत्येक مَارْجَ پر لوگوں کو دھمکانے کے لیے ن بُیٹھو اور اُنہے اُنہاں کی راہ سے ن رُوکو جو اُس پر ایمان لایے<sup>[2]</sup> ہیں اور اُسے تَدَّن بناوے، تथا اُس سامی کو یاد کرو جب تُم ٹوڈے ہے، تو تُمہے اُنہاں نے اधیک کر دیا۔ تथا دेखو کہ عپدھبیوں کا پरिणام کیا ہوا؟

87. اُور یہی تُمہارا اک سامُدَّاَیَ اُس پر ایمان لایا ہے جس کے ساتھ مैں

وَاللَّٰهُمَّ أَخَاهُمْ شَعِيبًا، قَالَ يَقُولُ  
أَعْبُدُ وَاللَّهُمَّ مَا أَكْلُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرِكَمْ قَدْ  
جَاءَنِي كَلْمَ بَيْتَنَةٍ مِنْ زَيْلَمْ فَأَوْفُوا لِكَلْمَ  
وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءً هُمْ  
وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا  
ذِلِّكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ ثُوِيدُونَ  
وَتَصْدِّقُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ يَرِيدُ  
وَتَبْغُونَهَا عَوْجَاجًا وَأَذْكَرُوا ذَكْرَهُ  
قَلِيلًا فَكَثُرَهُ وَأَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ  
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ

وَإِنْ كَانَ طَالِبَهُ مِنْكُمْ أَمْنُوا

1 مَدْيَنْ اک کبھیلے کا نام تھا اور اُسی کے نام پر اک نگر بس گیا جو ہیجاں کے عتھر-پشیم تھا اور فلسطین کے دکھن میں لال ساگر اور اکبھا خاڈی کے کینارے پر رہتا تھا۔ یہ لوگ ویاپار کرتے ہے پراچیں ویاپار راجپथ، لال ساگر کے کینارے یمن سے مکھا تھا اور یونیون ہوتے ہوئے سیریا تک جاتا تھا۔

2 جیسے مککا والے مککا کے باہر سے آنے والوں کو کُرْآن سونے سے روکا کرتے ہے اور نبی سلمانہ اعلیٰہی و سلم کو جادوگار کہ کر آپ کے پاس جانے سے روکتے ہے۔ پرانٹوں کی اک ن چلی، اور کُرْآن لوگوں کے دیلوں میں عترتہ اور اسلام فللتا گیا۔ اس سے پتا چلتا ہے کہ نبیوں کی شیکھاؤں کے ساتھ اُن کی جاتیوں نے اک جیسا ویباہ کیا۔

भेजा गया हूँ और दूसरा ईमान नहीं  
लाया है तो तुम धैर्य रखो, यहाँ तक  
कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे।  
और वह उत्तम न्याय करने वाला है।

88. उस की जाति के प्रमुखों ने जिन्हें  
घमंड था कहा कि है शुऐब! हम  
तुम को तथा जो तुम्हारे साथ ईमान  
लाये हैं अपने नगर से अवश्य  
निकाल देंगे। अथवा तुम सब को  
हमारे धर्म में अवश्य वापिस आना  
होगा। (शुऐब) ने कहा: क्या यदि हम  
उसे दिल से न मानें तो?
89. हम ने अल्लाह पर मिथ्या आरोप  
लगाया है, यदि तुम्हारे धर्म में इस  
के पश्चात् वापिस आ गये, जब  
कि हमें अल्लाह ने उस से मुक्त कर  
दिया है। और हमारे लिये संभव नहीं  
कि उस में फिर आ जायें, परन्तु  
यह कि हमारा पालनहार चाहता हो।  
हमारा पालनहार प्रत्येक वस्तु को  
अपने ज्ञान में समोये हुये है, अल्लाह  
ही पर हमारा भरोसा है। हमारे  
पालनहार! हमारे और हमारी जाति  
के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दे।  
और तू ही उत्तम निर्णयकारी है।
90. तथा उस की जाति के काफिर प्रमुखों  
ने कहा कि यदि तुम लोग शुऐब का  
अनुसरण करोगे तो वस्तुतः तुम लोगों  
का उस समय नाश हो जायेगा।
91. तो उन्हें भक्त्या ने पकड़ लिया फिर  
भोर हुई तो वे अपने घरों में औधे  
पड़े हुये थे।

يَا أَيُّهُمْ سُلْطٌ لَّهٗ وَطِلْكَ فَلَمْ يُؤْمِنُوا  
فَأَصْبَرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بِسِنَّا وَهُوَ  
خَيْرُ الْحَكَمِينَ ⑩

قَالَ الْمَلَائِكَةُ إِنَّكُمْ رُؤْسَاءُ الْأَرْضِ  
لَكُمْ مَا شَاءْتُمْ وَإِنَّكُمْ عَبْدَنَا  
قَرِيبُنَا وَلَمْ تَعُودُنَّ فِي لَيْلَاتِنَا قَالَ أَوْلَئِكَ كَفَرُهُمْ  
قَالَ الْمَلَائِكَةُ إِنَّكُمْ أَسْتَكْبَرُونَ مِنْ قَوْمِكُمْ

قَدْ أَفْرَغْنَا عَلَى الْمُوْلَكَيْنَ بَلْ عُذْلَانَ فِي مَلَكَتِكُمْ بَعْدَ  
إِذْ نَجَّبْنَا اللَّهَ مِنْهُمَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودُ فِيهِمَا إِلَّا  
أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا  
عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا إِذْ أَنْهَيْنَا فَخَوْبِيْنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا  
بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَتَحِينَ ⑪

وَقَالَ الْمَلَائِكَةُ إِنَّكُمْ كُفَّارٌ وَمِنْ قَوْمِهِ لَيْسَ أَبْعَدُ  
شَعِيبًا إِنَّمَا إِذَا الْخَيْرُونَ ⑫

فَلَمَّا خَذَلَهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ  
جِهَنَّمَ ۖ

92. جینہوں نے شُعَرَب کو جُنُثلا�ا (उन کی यह दशा हुई कि) मानो कभी उस नगर में बसे ही नहीं थे।

الَّذِينَ كَذَّبُوا سَعْيِهَا كَانُوا لَمْ يَغْنُوا فِيهَا الَّذِينَ كَذَّبُوا سَعْيِهَا كَانُوا هُمُ الْخَسِيرُونَ

93. तो शुएब उन से विमुख हो गया, तथा कहा: हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के संदेश पहुँचा दिये, तथा तुम्हारा हितकारी रहा। तो काफिर जाति (के विनाश) पर कैसे शोक करूँ?

مَتَوَلِّ عَنْهُمْ وَقَالَ يَقُولُ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمُ رَسْلِي  
رَبِّيْ وَتَصْحَّثُ لَكُمْ فَكَيْفَ إِنِّي عَلَىٰ قَوْمٍ كَفَرُهُمْ

94. तथा हम ने जब किसी नगरी में कोई नवी भेजा, तो उस के निवासियों को आपदा, तथा दुःख में ग्रस्त कर दिया कि संभवतः वह विन्ती करें।<sup>[1]</sup>

وَمَا أَرْسَلْنَا فِيْ قَرْبَىٰ مِنْ بَيْنِ إِلَآخَذَنَا أَهْلَهُمَا  
بِالْبَأْسَاءِ وَالْفَرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَرَوُنَّ

95. फिर हम ने आपदा को सुख सुविधा से बदल दिया, यहाँ तक कि जब वह सुखी हो गये, और उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों को भी दुःख तथा सुख पहुँचता रहा है, तो अकस्मात् हम ने उन्हें पकड़ लिया, और वह समझ नहीं सके।

لَقَدْ بَدَلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوْا  
وَقَاتَلُوا قَدْ مَسَّ أَيْمَانَ الْفَرَّاءِ وَالسَّيِّئَةِ لَخَذَنَهُمْ  
بَعْتَهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

96. और यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते, और कुकर्मा से बचे रहते, तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पत्ति के द्वारा खोल देते।

وَلَوْلَىٰ أَهْلِ الْقُرَىٰ امْتَنُوا وَانْفَعُوا فَتَعْمَلُنَا  
عَلَيْهِمْ بِرَبِّكُلٍّ مِنَ الشَّهَاءِ وَالْأَرْضِ وَلِكُلِّ  
كَذَّبُوا فَأَخَذَنَهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

1 आयत का भावार्थ यह है कि सभी नवी अपनी जाति में पैदा हुये। सब अकेले धर्म का प्रचार करने के लिये आये। और सब का उपदेश एक था कि अल्लाह की वंदना करो उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। सब ने सत्कर्म की प्रेरणा दी, और कुकर्म के दुष्परिणाम से सावधान किया। सब का साथ निर्धनों तथा निर्वलों ने दिया। प्रमुखों और बड़ों ने उन का विरोध किया। नवियों का विरोध भी उन्हें धर्मकी तथा दुःख दे कर किया गया। और सब का परिणाम भी एक प्रकार हुआ, अर्थात् उन को अल्लाह की यातना ने घेर लिया। और यही सदा इस संसार में अल्लाह का नियम रहा है।

परन्तु उन्होंने झुठला दिया। अतः हम ने उन के कर्ताओं के कारण उन्हें (यातना में) घेर लिया।

97. तो क्या नगर वासी इस बात से निश्चन्त हो गये हैं कि उन पर हमारी यातना रातों रात आ जाये, और वह पड़े सो रहे हों?
98. अथवा नगरवासी निश्चन्त हो गये हैं कि हमारी यातना उन पर दिन के समय आ पड़े, और वह खेल रहे हों?
99. तो क्या वह अल्लाह के गुप्त उपाय से निश्चन्त हो गये हैं? तो (याद रखो!) अल्लाह के गुप्त उपाय से नाश होने वाली जाति ही निश्चन्त होती है।
100. तो क्या उन को शिक्षा नहीं मिली जो धरती के वारिस होते हैं उस के अगले वासियों के पश्चात्? कि यदि हम चाहें, तो उन के पापों के बदले उन्हें आपदा में ग्रस्त कर दें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दें, फिर वह कोई बात ही न सुन सकें।?
101. (हे नबी!) यह वह नगर हैं जिन की कथा हम आप को सुना रहे हैं। इन सब के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, तो वह ऐसे न थे कि उस (सत्य) पर विश्वास कर लें जिस को वे इस से पूर्व झुठला<sup>[1]</sup> चुके थे। इसी प्रकार अल्लाह काफिरों

أَقَمْنَا أَهْلَ الْقَرْبَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا  
بِيَأْنَا وَهُمْ لَا يَمْوَنُونَ ⑥

أَوْ أَمْنَى أَهْلُ الْقَرْبَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا أَصْنَعُ  
وَهُمْ لَا يَعْبُدُونَ ⑦

أَفَأَمْنُوا مَكْرُ اللَّهِٗ فَلَا يَأْمُنُ مَكْرُ اللَّهِٗ أَلَا  
الْقَوْمُ الظَّمِيرُونَ ⑧

أَوْ لَمْ يَهْدِي اللَّهُ دِيَنَنَّ يَرْثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ  
أَهْلِهَا أَنْ لَوْنَشَاءُ أَصْبَنَهُمْ بِذُنُوبِهِمْ  
وَنَظَبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَمْعُونَ ⑨

إِذْلِكَ الْقَرْبَىٰ نَقْصٌ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَابِهَا وَلَعْنَ  
جَاءَنَّهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبُيُّنَتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا  
بِمَا أَكَدُّ بُوَامِنْ قَبْلَ كَذِيلَكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ  
قُلُوبِ الْكُفَّارِينَ ⑩

<sup>1</sup> अर्थात् सत्य का प्रमाण आने से पहले झुठला दिया था उस के पश्चात् भी अपनी हठधर्मी से उसी पर अड़े रहे।

के दिलों पर मुहर लगाता है।

102. और हम ने उन में अधिकतर को वचन पर स्थित नहीं पाया<sup>[1]</sup> तथा हम ने उन में अधिकृतर को अवज्ञाकारी पाया।
103. फिर हम ने इन रसूलों के पश्चात् मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ फ़िरअौन<sup>[2]</sup> और उस के प्रमुखों के पास भेजा, तो उन्होंने भी हमारी आयतों के साथ अन्याय किया, तो देखो कि उपद्रवियों का क्या परिणाम हुआ?
104. तथा मूसा ने कहा: हे फ़िरअौन! मैं वास्तव में विश्व के पालनहार का रसूल (सदेश वाहक) हूँ।
105. मेरे लिये यही योग्य है कि अल्लाह के विषय में सत्य के अतिरिक्त कोई बात न करूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण लाया हूँ। इस लिये मेरे साथ बनी इसाईल<sup>[3]</sup> को जाने दो।

وَمَا وَجَدْنَا إِلَّا كُثُرَ هُمْ مِنْ عَمَدٍ وَإِنْ  
وَجَدْنَا إِلَّا كُثُرَ هُمْ لَفِسِيقِينَ ①

ثُمَّ بَعْثَتْنَا مِنْ يَعْدِيهِمُوسَى يَا لِيَتَنَا إِلَى  
فِرْعَوْنَ وَمَلَائِكَهُ فَظَلَمُوا إِلَيْهَا فَانْظَرْ كَيْفَ كَانَ  
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ②

وَقَالَ مُوسَى لِفِرْعَوْنَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ  
الْعَالَمِينَ ③

حَقِيقٌ عَلَى أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا حَقٌّ قَدْ  
جَعَلَمُ بِيَتَنَوْمٌ رَّتِيكُلُ فَارِسِلْ مَعِيَ بَنِي  
إِسْرَائِيلَ ④

1 इस से उस प्रण (वचन) की ओर संकेत है, जो अल्लाह ने सब से «आदि काल» में लिया था कि क्या मैं तुम्हारा पालनहार (पूज्य) नहीं हूँ? तो सब ने इसे स्वीकार किया था। (देखिये: सूरह आराफ़, आयत, 172)

2 मिस्र के शासकों की उपाधि फ़िरअौन होती थी। यह इसा पूर्व डेढ़ हजार वर्ष की बात है। उन का राज्य शाम से लीबिया तथा हब्शा तक था। फ़िरअौन अपने को सब से बड़ा पूज्य मानता था और लोग भी उस की पूजा करते थे। उस की ओर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को एक अल्लाह की इबादत का सदेश देकर भेजा कि पूज्य तो केवल अल्लाह है उस के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

3 बनी इसाईल यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के युग में मिस्र आये थे। तथा चार सौ वर्ष का युग बड़े आदर के साथ व्यतीत किया। फिर उन के कुकर्मा के कारण फ़िरअौन

106. उस ने कहा: यदि तुम कोई प्रमाण (चमत्कार) लाये हो तो उसे प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो।
107. फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी, तो अकस्मात् वह एक अजगर बन गई।
108. और अपना हाथ (जैब से) निकाला तो वह देखने वालों के लिये चमक रहा था।
109. फिर औन की जाति के प्रमुखों ने कहा: वास्तव में यह बड़ा दक्ष जादूगर है।
110. वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकालना चाहता है। तो अब क्या आदेश दे रहे हो?
111. सब ने कहा: उस को और उस के भाई (हारून) को अभी छोड़ दो, और नगरों में एकत्र करने के लिये हरकारे भेजो।
112. जो प्रत्येक दक्ष जादूगरों को तुम्हारे पास लायें।
113. और जादूगर फिर औन के पास आ गये। उन्होंने कहा: हमें निश्चय पूरस्कार मिलेगा, यदि हम ही विजयी हो गये तो!
114. फिर औन ने कहा: हाँ। और तुम मेरे समीपवर्तियों में से भी हो जाओगे।

قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِيَأْيَةً فَأُبْلِغَهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ  
الصَّابِرِينَ ⑩

فَأَلْقَى عَصَاهُ قَيْدًا هِيَ شَعْبَانُ مِنْ ١٠

وَنَزَعَ يَدَهُ قَيْدًا هِيَ بَيْضَاءُ الظَّهِيرَةِ ١١

قَالَ الْمَلَائِكَةُ يَوْمَ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا السَّاحِرُ  
عَلَيْهِ ١٢

يُرِيدُ أَنْ يُغْرِي جَهَنَّمَ مِنْ أَرْضِكُمْ فَهَذَا  
نَّاًمُرُونَ ⑪

قَالُوا أَرْجِعْهُ وَلَا خَاءُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ  
جَشِيرِينَ ١٣

يَا نُوكَ بِحِلْ سُعْدِ عَلِيُّو ⑫

وَجَاءَ السَّعْدَةُ فِرْعَوْنَ قَالَ لَهُ أَنْ لَكَ الْأَجْرُ إِنْ ١٤  
عَنْ الْغَلِيلِينَ ⑬

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّمَا لَيْسَ الْمُنْتَكِبِينَ ١٥

और उस की जाति ने उन को अपना दास बना लिया। जिस के कारण मूसा (अलैहिस्सलाम) ने बनी इस्लाईल को मुक्त करने की माँग की। (इन्हे कसीर)

115. جادوگارों ने कहा: हे मूसा! तुम (पहले) फेंकोगे, या हमें फेंकना होगा?
116. मूसा ने कहा: तुम्हीं फेंको। तो उन्होंने जब (रसियाँ) फेंकी, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, और उन्हें भयभीत कर दिया। और बहुत बड़ा जादू कर दिखाया।
117. तो हम ने मूसा को वही की, कि अपनी लाठी फेंको। और वह अकस्मात् झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगी।
118. अतः सत्य सिद्ध हो गया, और उन का बनाया मंत्र-तंत्र व्यर्थ हो कर<sup>[1]</sup> रह गया।
119. अन्ततः वह पराजित कर दिये गये, और तृच्छ तथा अपमानित हो कर रह गये।
120. तथा सभी जादूगर (मूसा का सत्य) देख कर सज्दे में गिर गये।
121. उन्होंने कहा: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।
122. जो मूसा तथा हारून का पालनहार है।
123. फिर औन ने कहा: इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ तुम उस पर ईमान ले आये? वास्तव में यह षड्यंत्र है जिसे तुम ने नगर में रचा है, ताकि उस के निवासियों को उस से निकाल दो! तो शीघ्र ही तुम्हें इस

<sup>1</sup> کुर्�आन ने अब से तेरह सौ वर्ष पहले यह घोषणा कर दी थी कि जादू तथा मंत्र-तंत्र निर्मल हैं।

قَالُوا يَمْوَسَى إِنَّا أَنْتُمْ تُلْقَى وَإِنَّا أَنْ نَلْقَوْنَا مَعْنَى  
الْمُلْقِينَ ⑤

قَالَ الْمُؤْمِنُوا فَلَمَّا أَفْتَأَتِ الْقَوَافِشَ حَرَوْا أَعْيُنَ النَّاسِ  
وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُو بِسُخْرَةٍ عَظِيمٍ ⑥

وَأَوْجَحَنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَنْتِ عَصَالٌ فَإِذَا هِيَ  
تَلْقَنُ مَا يَأْتِي فَلَمْ يُؤْمِنُ ⑦

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑧

فَغَلَبُوا هُنَّاكَ وَانْقَلَبُوا صَغِيرِينَ ⑨

وَأَنْتَ السَّاحِرُ سُجِّدُوا ⑩

قَالُوا أَمْنَاءِنَا رَبُّ الْعَلَمِينَ ⑪

رَبِّ مُوسَى وَهُرُونَ ⑫

قَالَ فِرْعَوْنُ أَمْنَثُمْ يَهُ قَبْلَ أَنْ اذَنَ لَكُمْ أَنْ  
هَذَا الْمَكْرُ مَكْرُ شُوْهُهُ فِي الْمَدِينَةِ وَلَا خُرُوجُهُمْ  
أَهْلَهُمْ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ⑬

(के परिणाम) का ज्ञान हो जायेगा।

124. मैं अवश्य तुम्हारे हाथ तथा पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा, फिर तुम सभी को फाँसी पर लटका दूँगा।
125. उन्हों ने कहा: हमें अपने पालनहार ही की ओर प्रत्येक दशा में जाना है।
126. तू हम से इसी बात का तो बदला ले रहा है कि हमारे पास हमारे पालनहार की आयतें (निशानियाँ) आ गईं? तो हम उन पर ईमान ला चुके हैं। हे हमारे पालनहार! हम पर धैर्य (की धारा) उँडेल दे! और हमें इस दशा में (संसार से) उठा कि तेरे आज्ञाकारी रहें।
127. और फ़िर औन की जाति के प्रमुखों ने (उस से) कहा: क्या तुम मूसा और उस की जाति को छोड़ दोगे कि देश में विद्रोह करें, तथा तुम को और तुम्हारे पूज्यों<sup>[1]</sup> को छोड़ दें? उस ने कहा: हम उन के पुत्रों को बध कर देंगे, और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देंगे, हम उन पर दबाव रखते हैं।
128. मूसा ने अपनी जाति से कहा: अल्लाह से सहायता माँगो, और सहन करो, वास्तव में धरती अल्लाह की है, वह

لَا قَطْعَنَّ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلَهُمْ مِنْ خِلَافِ ثُمَّ  
لَا صِلَبَتْهُمْ أَجْمَعِينَ ⑩

قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْتَهُونَ ۖ

وَمَا أَنَّقْمُ مِنَ الْأَنْ أَمْتَأْيَتْ رَبِّنَا لَهَا  
جَاءَتْنَا رَبِّنَا فِي غُلَمَنَا صَبْرًا وَتَوْفِنَا  
مُسْلِمِينَ ۖ

وَقَالَ الْمُلَائِكَ مَنْ قَوْمُ فِرْعَوْنَ أَتَدْرُمُوسِي  
وَقَوْمَهُ لِيُقْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرُوكَ  
وَالْمَهَنَكَ ۖ قَالَ سَقْنَتِلْ أَبْنَاءَ هُمْ وَسَنَتِنِي  
نِسَاءُهُمْ وَإِنَّا فِوْقَهُمْ قِهْرُونَ ۖ ⑪

قَالَ مُوسِيٌ لِقَوْمِهِ اسْتَعِنُو بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا  
إِنَّ الْأَرْضَ يَلْهُو يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ

1) कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि मिस्री अनेक देवताओं की पूजा करते थे। जिन में सब से बड़ा देवता: सर्य था। जिसे «रूअ», कहते थे। और राजा को उसी का अवतार मानते थे, और उस की पूजा, और उस के लिये सज्दा करते थे जिस प्रकार अल्लाह के लिये सज्दा किया जाता है।

अपने भक्तों में से जिसे चाहे उस का वारिस (उत्तराधिकारी) बना देता है। और अन्त उन्हीं के लिये है जो आज्ञाकारी हों।

129. उन्हों ने कहा: हम तुम्हारे आने से पहले भी सताये गये और तुम्हारे आने के पश्चात् भी (सताये जा रहे हैं)! मूसा ने कहा: समीप है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे शत्रु का विनाश कर दे, और तुम्हें देश में अधिकारी बना दे। फिर देखे कि तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं।
130. और हम ने फ़िरआौन की जाति को अकालों तथा उपज की कमी में ग्रस्त कर दिया ताकि वह सावधान हो जायें।
131. तो जब उन पर सम्पदता आती तो कहते कि हम इस के योग्य हैं और जब अकाल पड़ता, तो मूसा और उस के साथियों से बुरा सगुन लेते। सुन लो! उन का बुरा सगुन तो अल्लाह के पास<sup>[1]</sup> था, परन्तु अधिकृतर लोग इस का ज्ञान नहीं रखते।
132. और उन्हों ने कहा: तू हम पर जादू करने के लिये कोई भी आयत (चमत्कार) ले आये तो हम तेरा विश्वास करने वाले नहीं हैं।

عَبَادَةُ وَالْعَاقِبةُ لِلْمُتَّقِينَ ④

قَالُوا أُوذِنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ  
مَا جَعَلْنَا ۝ قَالَ عَلَى رَبِّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَذَوْكُمْ  
وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوكُمْ  
۝ تَعْمَلُونَ ۝

وَلَقَدْ أَخْذَنَا إِلَى فِرْعَوْنَ يَأْتِيَنَا وَنَعْصِي  
مِنَ الشَّهَرِ لَعَلَّهُ يَذَّلَّكُونَ ⑤

فَإِذَا جَاءَنَاهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا نَاهِنَّ ۝ وَلَنْ  
تُصْبِحُهُمْ سَيِّئَةً تَظَاهِرُ وَإِبْهُوسٌ وَمَنْ مَعَهُمْ أَلَا  
إِنَّمَا أَطْهِرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلِكُنَّ أَكْثَرَهُمْ  
لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَقَالُوا مَهُمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ أَيْمَانِنَا  
بِهَا فَمَا خَلَعْنَا لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ⑥

1 अर्थात् अल्लाह ने प्रत्येक दशा के लिये एक नियम बना दिया है जिस के अनुसार कर्मों के परिणाम सामने आते हैं चाहे वह अशुभ हों या न हों सब अल्लाह के निर्धारित नियम अनुसार होते हैं।

133. انہیں: ہم نے اُن پر تُوفَّان (उग वर्षा) تथा تیڑی دل اور جُو ائے एवं मेढ़क और رکत की वर्षा भेजी। اُلگا اُلگا نिशानियाँ, फिर भी اُنहोंने अभिमान کिया, और وہ थी ही अपराधी जाति।

134. और जब اُن पर यातना आ पड़ी तो اُनहोंने कहा: है मूसा! तू अपने पालनहार से उस वचन के कारण जो उस ने तुझे दिया है, हमारे लिये प्रार्थना कर। यदि तू ने (अपनी प्रार्थना से) हम से यातना दूर कर दी तो हम अवश्य तेरा विश्वास कर लेंगे, और बनी इस्राईल को तेरे साथ जाने की अनुमति दे देंगे।

135. फिर जब हम ने एक विशेष समय तक के लिये उन से यातना दूर कर दी जिस तक اُنहोंने पहुँचना था, तो अकस्मात् वह वचन भंग करने लगे।

136. انہیں: हम نے اُن سے بदला लिया और اُنہोंने सागर में डुबो दिया। इस कारण कि اُنہोंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया और اُن से निश्चेत हो गये थे। उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फ़िर औन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलै छप्परों पर चढ़ा रही थी।<sup>[1]</sup>

137. और हम ने उस जाति (बनी

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الظُّفُونَ وَالْجَرَادَ وَالْعَنَّا  
وَالضَّفَادُ وَالدَّمَ الَّذِي مُنْقَصِّلٌ فَاسْتَكْبَرُوا  
وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ⑧

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الْرِّجْزُ قَالُوا يَمْوُسَى ادْعُ لَنَا  
رَبَّنَا بِمَا عَاهَدَ إِذْنَكَ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا  
الْرِّجْزَ لَمْ يَوْمَنَ لَكَ وَلَرُسْلَنَ مَعَكَ بَنِي  
إِسْرَائِيلَ ۖ

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَى أَجَلِهِمْ هُمْ  
بِلِغْوَةٍ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ⑨

فَأَنْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ يَا نَاهُمْ  
كَذَّبُوا يَارِبَّنَا وَكَانُوا عَنْهُمْ غَافِلِينَ ⑩

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ

<sup>1</sup> अर्थात्: उन के ऊँचे ऊँचे भवन, तथा सुन्दर बाग बगीचे।

इस्राईल) को जो निर्बल समझे जा रहे थे धरती (शाम देश) के पश्चिमों तथा पूर्वों का जिस में हमने बरकत दी थी अधिकारी बना दिया। और (इस प्रकार हे नवी!) आप के पालनहार का शुभ वचन बनी इस्राईल के लिये पूरा हो गया, उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हमने उसे ध्वस्त कर दिया जो फिरअौन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलै छप्परों पर चढ़ा रहे थे।<sup>[1]</sup>

138. और बनी इस्राईल को हमने सागर पार करा दिया, तो वह एक जाति के पास से हो कर गये जो अपनी मर्तियों की पूजा कर रही थी, उन्होंने कहा: हे मूसा! हमारे लिये वैसा ही एक पूज्य बना दीजिये जैसे उन के पूज्य हैं। मूसा ने कहा: वास्तव में तुम अज्ञान जाति हो।
139. यह लोग जिस रीति में हैं उसे नाश हो जाना है, और वह जो कुछ कर रहे हैं सर्वथा असत्य है।
140. मूसा ने कहा: क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिये कोई दूसरा पूज्य निर्धारित करूँ जब कि उस ने तुम्हें सारे संसारों के वासियों पर प्रधानता दी है?
141. तथा उस समय को याद करो, जब हमने तुम्हें फिरअौन की जाति से बचाया। वह तुम्हें घोर यातना दे रहे

مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارَبَهَا أَلَّا يُرَكِّنَا فِيهَا  
وَتَمَّتْ كُلَّ مُتْرَكَ الْحُسْنَى عَلَى بَيْنِ إِسْرَاءِينِ  
بِمَا صَبَرُوا وَدَمَرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ  
وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ<sup>®</sup>

وَجَوَزْنَا بَيْنِ إِسْرَاءِينِ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَى قَوْمٍ  
يَعْلَمُونَ عَلَى أَصْنَامِهِمْ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ أَجْعَلُ  
لَئِنَّا لَهَا كَمَا الْحُمْرَ الْمَاهِمْ قَالَ إِنَّمَا قَوْمٌ  
يَعْمَلُونَ<sup>®</sup>

إِنَّ هُولَاءِ مُتَبَرِّمَاهُمْ فِيْهِ وَبِطْلٍ مَا كَلُوا  
يَعْمَلُونَ<sup>®</sup>

قَالَ أَغْيِرَ اللَّهُ أَبْغِيْكُمْ لِهَا وَهُوَ فَضَلَّكُمْ عَلَى  
الْعَلَمِينَ<sup>®</sup>

وَإِذَا نَجَيْنَاهُمْ مِنْ أَلِ فِرْعَوْنَ يَسْوُمُونَكُمْ وَوَرَهُ  
الْعَذَابُ يَقْتَلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ

1 अर्थात्: उन के ऊँचे ऊँचे भवन, तथा सुन्दर बाग बगीचे।

थे। तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे,  
और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रख  
रहे थे। और इस में तुम्हारे पालनहार  
की ओर से भारी परीक्षा थी।

142. और हम ने मूसा को तीस रातों  
का वचन<sup>[1]</sup> दिया। और उस की  
पूर्ति दस रातों से कर दी। तो तेरे  
पालनहार की निर्धारित अवधि  
चालीस रात पूरी हो गयी। तथा  
मूसा ने अपने भाई हारून से कहा:  
तुम मेरी जाति में मेरा प्रतिनिधि  
रहना तथा सुधार करते रहना, और  
उपद्रवकारियों की नीति न अपनाना।

143. और जब मूसा हमारे निर्धारित  
समय पर आ गया, और उस के  
पालनहार ने उस से बात की, तो  
उस ने कहा: हे मेरे पालनहार!  
मेरे लिये अपने आप को दिखा  
दे ताकि मैं तेरा दर्शन कर लूँ।  
अल्लाह ने कहा: तू मेरा दर्शन नहीं  
कर सकेगा। परन्तु इस पर्वत की  
ओर देख। यदि वह अपने स्थान पर  
स्थिर रह गया तो तू मेरा दर्शन  
कर सकेगा। फिर जब उस का  
पालनहार पर्वत की ओर प्रकाशित  
हुआ तो उसे चूर-चूर कर दिया।  
और मूसा निश्चेत हो कर गिर  
गया। और जब चेतना में आया, तो  
उस ने कहा: तू पवित्र है! मैं तुझ  
से क्षमा माँगता हूँ। तथा मैं सब

نَسَاءٌ كُفَّارٌ فِي ذِلْكُمْ بَلَادُهُمْ رَبِيعٌ عَظِيمٌ

وَعَدْنَا مُوسَى تَلِيلِينَ لَيْلَةً وَآتَيْنَاهَا  
بِعَشِيرٍ فَتَحَمَّلَ مِيقَاتُ رَبِيعٍ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً  
وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ وَهُرُونَ احْلُقْنِي فِي  
قَوْمٍ وَأَصْلِهُ وَلَا تَتَبَعِّمْ سَبِيلَ  
الْمُفْسِدِينَ

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِيُبَيِّقَاتِنَا وَكَلَمَةَ رَبِّهِ قَالَ رَبِّ  
أَرْفِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ قَالَ لَنْ تَرَبِّيَ وَلَكِنْ افْطُرْ  
إِلَى الْجَبَلِ فَإِنْ أَسْتَعْفَرَ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَبِّيَ  
فَلَمَّا تَجَلَّ رَبِّهِ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَبَّابًا وَخَرَّ  
مُوسَى صَعِقًا فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبِّحْنَكَ تُبَتِّ  
إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ

1 अर्थात् तूर पर्वत पर आकर अल्लाह की इबादत करने और धर्मविधान प्रदान  
करने के लिये।

प्रथम<sup>[1]</sup> ईमान लाने वालों में से हूँ।

144. अल्लाह ने कहा: हे मूसा! मैं ने तुझे लोगों पर प्रधानता दै कर अपने संदेशों तथा अपने वार्तालाप द्वारा निर्वाचित कर लिया है। अतः जो कुछ तुझे प्रदान किया है उसे ग्रहण कर ले, और कृतज्ञों में हो जा।
145. और हम ने उस के लिये तख्तयों पर (धर्म के) प्रत्येक विषय के लिये निर्देश और प्रत्येक बात का विवरण लिख दिया। (तथा कहा कि) इसे दृढ़ता से पकड़ लो, और अपनी जाति को आदेश दो कि उस के उत्तम निर्देशों का पालन करों और मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखा दूँगा।
146. मैं उन्हें<sup>[2]</sup> अपनी आयतों (निशानियों) से फेर<sup>[3]</sup> दूँगा जो धरती में अवैध अभिमान करते हैं। और यदि वह प्रत्येक आयत (निशानी) देख लें तब भी उस पर ईमान नहीं लायेगे। और यदि वह सुपथ देखेंगे तो उसे नहीं अपनायेगे। और यदि कुपथ देख लें तो उसे अपना लेंगे। यह इस कारण कि

قَالَ يَهُوَسَى إِلَيْهِ أَصْطَفَنِيَّكَ عَلَى النَّاسِ  
بِرِسْلَاتِيْ وَبِحَلَامِيْ فَخَذْ مَا أَنْتِكَ وَكُنْ  
مِّنَ الشَّاكِرِيْنَ ④

وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْعِظَةً  
وَنَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ فَخَذْهَا بِقُوَّةٍ وَأَمْرٍ  
قَوْمَكَ يَأْخُذُوا بِاَحْسَنِهَا سَأُرِيكُمْ دَارَ  
الْفَقِيرِيْنَ ⑤

سَأَصْرِفُ عَنِ الْيَتَيِّ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي  
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَلَنْ يَرْوَا كُلَّ أَيْمَانٍ  
يُؤْمِنُوا بِهَا وَلَنْ يَرْوَا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَسْعِدُونَ  
سَبِيلًا وَلَنْ يَرْوَا سَبِيلَ الْقَوْنِيْ كَيْتَعْدِنُو  
سَبِيلًا ذَلِكَ يَأْنَهُمْ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا  
عَنْهَا غَفِيلِيْنَ ⑥

1 इस से प्रत्यक्ष हुआ कि कोई व्यक्ति इस संसार में रहते हुये अल्लाह को नहीं देख सकता और जो ऐसा कहते हैं वह शैतान के बहकावे में हैं। परन्तु सहीह हदीस से सिद्ध होता है कि आखिरत में ईमान वाले अल्लाह का दर्शन करेंगे।

2 अर्थात् तुम्हें उन पर विजय दूँगा जो अवैज्ञाकारी हैं, जैसे उस समय की अमालिका इत्यादि जातियों पर।

3 अर्थात् जो जान बूझ कर अवैज्ञाकरेगा अल्लाह का नियम यही है कि वह तर्कों तथा प्रकाशों से प्रभावित होने की योग्यता खो देगा। इस का यह अर्थ नहीं कि अल्लाह किसी को अकारण कुपथ पर बाध्य कर देता है।

उन्हों ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, और उन से निश्चेत रहे।

147. और जिन लोगों ने हमारी आयतों, तथा परलोक (में हम से) मिलने को झुठला दिया, उन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और उन्हें उसी का बदला मिलेगा, जो कुकर्म वह कर रहे थे।
148. और मूसा की जाति ने उस के (पर्वत पर जाने के) पश्चात् अपने आभूषणों से एक बछड़े की मूर्ति बना ली, जिस से गाय के डकारने के समान ध्वनि निकलती थी। क्या उन्हों ने यह नहीं सोचा कि न तो वह उन से बात<sup>[1]</sup> करता है और न किसी प्रकार का मार्गदर्शन देता है? उन्हों ने उसे बना लिया, तथा वे अत्याचारी थे।
149. और जब वह (अपने किये पर) लज्जित हुये और समझ गये कि वह कुपथ हो गये हैं, तो कहने लगे: यदि हमारे पालनहार ने हम पर दया नहीं की, और हमें क्षमा नहीं किया, तो हम अवश्य विनाशों में हो जायेंगे।
150. और जब मूसा अपनी जाति की ओर क्रोध तथा दुख से भरा हुआ वापिस आया तो उस ने कहा: तुम ने मेरे

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلَقَاءَ الْآخِرَةِ  
حِيطَتْ أَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوُنَ الْأَمَانًا كَائِنًا  
يَعْمَلُونَ ﴿٢﴾

وَلَمَّا سَقَطَ فِي الْيَدِيهِمْ وَرَأُوا أَنَّهُمْ قَدْ  
ضَلُّوا لِقَاءَ الْوَالِهِنَّ لَمْ يُرْجِعُنَّ إِلَيْنَا وَيَعْفُرُنَا  
لَكُلُّهُمْ وَلَا يَهْدِي هُمْ سَبِيلًا إِلَيْنَا وَهُمْ  
وَكَانُوا أَظْلَمِ الظَّالِمِينَ ﴿٣﴾

وَلَمَّا سَقَطَ فِي الْيَدِيهِمْ وَرَأُوا أَنَّهُمْ قَدْ  
ضَلُّوا لِقَاءَ الْوَالِهِنَّ لَمْ يُرْجِعُنَّ إِلَيْنَا وَيَعْفُرُنَا  
لَكُلُّهُمْ وَمِنَ الْخَسِيرِينَ ﴿٤﴾

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَى إِلَى قَوْمِهِ عَصْبَانَ أَيْسَفًا  
قَالَ إِنِّي أَخْلَقْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي أَعْلَمُ أَمْرًا

<sup>1</sup> अर्थात् उस से एक ही प्रकार की ध्वनि क्यों निकलती है। बाबिल और मिस्र में भी प्राचीन युग में गाय-बैल की पूजा हो रही थी। और यदि बाबिल की सभ्यता को प्राचीन मान लिया जाये तो यह विचार दूसरे देशों में वहाँ से फैला होगा।

पश्चात् मेरा बहुत बुरा प्रतिनिधित्व किया। क्या तुम अपने पालनहार की आज्ञा से पहलै ही जल्दी कर<sup>[1]</sup> गये। तथा उस ने लेख तख्तियाँ डाल दी, तथा अपने भाई (हारून) का सिर पकड़ के अपनी ओर खींचने लगा। उस ने कहा: हे मेरे माँ जाये भाई! लोगों ने मुझे निर्बल समझ लिया तथा समीप था कि वे मुझे मार डालें। अतः तू शत्रुओं को मुझ पर हँसने का अवसर न दो। मुझे अत्याचारियों का साथी न बना।

151. मूसा ने कहा:<sup>[2]</sup> हे मेरे पालनहार! मुझे तथा मेरे भाई को क्षमा कर दो। और हमें अपनी दया में प्रवेश दो। और तू ही सब दयाकारियों से अधिक दयाशील है।
152. जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया उन पर उन के पालनहार का प्रकोप आयेगा और वे संसारिक जीवन में अपमानित होंगे। और इसी प्रकार हम झूठ घड़ने वालों को दण्ड देते हैं।
153. और जिन लोगों ने दुष्कर्म किया, फिर उस के पश्चात् क्षमा माँग ली, और ईमान लाये, तो वास्तव में तेरा पालनहार अति क्षमाशील दयावान् है।
154. फिर जब मूसा का क्रोध शान्त हो गया तो उसे ने लेख तख्तियाँ उठा

رَبِّكُمْ وَالَّذِي الْأَلْوَاحُ وَأَخْدَى بِرَأْسٍ أَجْبَرَهُ  
إِلَيْهِ قَالَ إِنِّي أَمْرَأٌ مِّنَ الْقَوْمِ الْمُسْتَضْعَفُونَ  
وَكَادُوا يَقْتُلُونِي فَلَا كُثُرَتِي إِنَّ الْأَعْدَاءَ لَوْلَا  
يَعْلَمُنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّلِمِينَ<sup>④</sup>

قَالَ رَبِّي أَغْفِرْنِي وَلَا كُنْ فِي وَادْجُلَنَّا فِي رَحْمَتِكَ  
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ<sup>٥</sup>

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعُجُولَ سَيِّئَ الْمُعْصَبُ مِنْ  
رَّبِّهِمْ وَذَلِكَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَكَذَلِكَ بَعْدِهِ  
الْمُفْلِسُونَ<sup>٦</sup>

وَالَّذِينَ عَلَوْا السَّبِيلَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا  
وَأَمْوَالُهُمْ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ<sup>٧</sup>

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحُ

1 अर्थात् मेरे आने की प्रतीक्षा नहीं की।

2 अर्थात् जब यह सिद्ध हो गया कि मेरा भाई निर्दोष है।

लीं, और उस के लिखे आदेशों में मार्गदर्शन तथा दया थी उन लोगों के लिये जो अपने पालनहार से ही डरते हों।

155. और मूसा ने हमारे निर्धारित<sup>[1]</sup> समय के लिये अपनी जाति के सत्तर व्यक्तियों को चुन लिया। और जब उन्हें भूकम्प ने घेर<sup>[2]</sup> लिया तो मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! यदि तू चाहता तो इन सब का इस से पहले ही विनाश कर देता, और मेरा भी। क्या तू हमारा उस कुर्कम्म के कारण नाश कर देगा जो हम में से कुछ निर्बोध कर गये? यह<sup>[3]</sup> तेरी ओर से केवल एक परीक्षा थी। तू जिसे चाहे उस के द्वारा कुपथ कर दे, और जिसे चाहे सुपथ दर्शा दे। तू ही हमारा संरक्षक है, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दो। और हम पर दया कर, तू सर्वोत्तम क्षमावान् है।

156. और हमारे लिये इस संसार में भलाई लिख दे तथा परलोक में भी, हम तेरी ओर लौट आयो। उस (अल्लाह) ने कहा: मैं अपनी यातना जिसे चाहता हूँ देता हूँ। और मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये

وَقِيْدُسُجْنَتِهَا هُدُىٰ وَرَحْمَةً لِلّذِينَ هُوَ لَرَبِّهِمْ  
بِرُّهُبُّونَ<sup>[4]</sup>

وَأَخْتَارَ مُؤْنَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِمِيقَاتِنَا  
فَلَمَّا أَخْذَهُمُ الرَّجْنَةُ قَالَ رَبٌّ أَوْثَنَتْ أَفْلَكَتُهُمْ  
مِنْ قَبْلٍ وَإِنَّا إِنَّمَا لَنَا إِيمَانُ الشُّفَاهَاءِ مِنَّا إِنْ  
هِيَ إِلَّا فِتْنَةٌ تُضُلُّ بِهَا مَنْ شَاءَ وَتَهْدِي مَنْ  
شَاءَ إِنَّمَّا نَنْهَا فَإِغْرِيْقُلَّنَا وَأَرْهَمُنَا وَإِنَّمَّا  
الْغُفْرِينَ<sup>[5]</sup>

وَأَكْتُبْ لِكُلِّ فِيْهِ الْدُّنْيَا حَسَنَةً وَنِعْمَةً  
الْآخِرَةِ إِنَّا هُدُّنَا إِلَيْكُمْ قَالَ عَذَابِيْ أَصِيبُ  
يَهُ مَنْ أَشَاءَ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ سَيِّئَةٍ  
فَسَأَكْتُبُهَا لِلّذِينَ يَتَقْوَى وَيُؤْتُونَ الرُّكُوْنَ  
وَالَّذِينَ هُمْ بِإِيمَانِنَا يُؤْمِنُونَ<sup>[6]</sup>

1 अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम को आदेश दिया था कि वह तूर पर्वत के पास बछड़े की पूजा से क्षमा याचना के लिये कुछ लोगों को लायें। (इब्ने कसीर)

2 जब वह उस स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने यह माँग की कि हम को हमारी आँखों से अल्लाह को दिखा दो। अन्यथा हम तेरा विश्वास नहीं करेंगे। उस समय उन पर भूकम्प आया। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात बछड़े की पूजा।

है। मैं उसे उन लोगों के लिये लिख दूँगा जो अवैज्ञा से बचेंगे, तथा ज़कात देंगे, और जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे।

157. जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी नबी<sup>[1]</sup> है, जिन (के आगमन) का उल्लेख वह अपने पास तौरात तथा इंजील में पाते हैं। जो सदाचार का आदेश देंगे, और दूराचार से रोकेंगे। और उन के लिये स्वच्छ चीजों को हलाल (वैध) तथा मलीन चीजों को हराम (अवैध) करेंगे। और उन से उन के बोझ उतार देंगे, तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे। अतः जो लोग आप पर ईमान लाये और आप का समर्थन किया और आप की सहायता की, तथा उस प्रकाश (कुर्�आन) का अनुसरण किया जो आप के साथ उतारा गया, तो वही सफल होंगे।

158. (हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि

اَلَّذِينَ يَكُونُونَ الرَّسُولَ الْبَيِّنَ الْأَئِمَّةَ  
الَّذِينَ يَعْمَلُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرِيقَةِ  
وَالْأَعْمَلُونَ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَايُهُمْ عَنِ  
الْمُنْكَرِ وَيُحَلِّ لَهُمُ الْقَبَيْلَاتِ وَجَرِيمَةٍ عَلَيْهِمْ  
الْخَبَيْثَ وَيَقْصِمُ عَنْهُمْ اصْرَهُمْ وَالْأَفْلَلَ  
الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ قَاتِلَّذِينَ امْتُوا بِهِ  
وَعَزَّرُوا وَنَصَرُوا وَأَشْبَعُوا الثُّورَ الْأَيْمَانَ  
إِنَّمَا مَعَهُ أُولَئِكَ هُمُ الْمُنْلِحُونَ

فُلُّ يَارِبِّ الْأَنْسٍ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ الْأَكْرَمَ

1 अर्थात् बनी इस्लाईल से नहीं। इस से अभिप्राय अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, जिन के आगमन की भविष्यवाणी तौरात, इंजील तथा दूसरे धर्म शास्त्रों में पाई जाती है। यहाँ पर आप की तीन विशेषताओं की चर्चा की गयी है:

1. आप सदाचार का आदेश देंगे तथा दुराचार से रोकेंगे।
2. स्वच्छ चीजों के प्रयोग को उचित तथा मलीन चीजों के प्रयोग को अनुचित घोषित करेंगे।
3. अहले किताब जिन कड़े धार्मिक नियमों के बोझ तले दबे हुये थे उन्हें उन से मुक्त करेंगे। और सरल इस्लामी धर्मविधान प्रस्तुत करेंगे, और उन के आगमन के पश्चात् लोक-परलोक की सफलता आप ही के धर्मविधान के अनुसरण में सीमित होगी।

हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ जिस के लिये आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ, और उस के उस उम्मी नबी पर जो अल्लाह पर और उस की सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं। और उन का अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग दर्शन पा जाओ।<sup>[1]</sup>

159. और मूसा की जाति में एक गिरोह ऐसा भी है जो सत्य पर स्थित है, और उसी के अनुसार निर्णय (न्याय) करता है।

160. और<sup>[2]</sup> हम ने मूसा की जाति के बारह घरानों को बारह समुदायों में विभक्त कर दिया। और हम ने मूसा की ओर वही भेजी, जब उस की जाति ने उस से जल माँगा कि अपनी लाठी इस पथर पर मारो,

جَمِيعًا إِلَيْنَا لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ  
وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُغْبِي وَيُبْيِتُ فَإِنْمَا  
يَأْتِيهِ وَرَسُولُهُ الَّذِي أَرْقَى إِلَيْنَا يُؤْمِنُ  
بِاللَّهِ وَكَلِمَتِهِ وَآتَيْنَا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

وَمَنْ قَوْمٌ مُؤْسَىٰ أَمْهَلْنَا لَهُمْ بِالْحَقِيقَةِ وَلَا  
يَعْدُلُونَ

وَقَطَعْنَاهُمْ أَثْنَى عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أَمْمًا  
وَأَوْحَيْنَا إِلَيْ مُوسَىٰ إِذَا سَأَلْتَهُ قَوْمَهُ أَنَّ  
إِخْرَبْ تَعْصَمَكَ الْحَجَرَ فَأَفْهَمَ جَسَّثَ مِنْهُ أَذْنَانَ  
عَشْرَةَ عَيْنَانَ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أَنْوَافِ مَشْرِبِهِمْ  
وَظَلَّلَنَا عَلَيْهِمُ الْعَيْمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ

1 इस आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम के नबी किसी विशेष जाति तथा देश के नबी नहीं हैं, प्रलय तक के लिये पूरी मानव जाति के नबी हैं। यह सब को एक अल्लाह की वंदना कराने के लिये आये हैं, जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं। आप का चिन्ह अल्लाह पर तथा सब प्राचीन पुस्तकों और नवियों पर ईमान है। आप का अनुसरण करने का अर्थ यह है कि अब उसी प्रकार अल्लाह की पजा-अराधना करो जैसे आप ने की और बताई है। और आप के लाये हुये धर्म विधान का पालन करो।

2 इस से अभिप्राय वह लोग हैं जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के लाये हुये धर्म पर कायम थे और आने वाले नबी की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब वह आये तो तुरन्त आप पर ईमान लाये, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम इत्यादि।

तो उस से बारह स्रोत उबल पड़े, तथा प्रत्येक समुदाय ने अपने पीने का स्थान जान लिया। और उन पर बादलों की छाँव की, और उन पर मब्र तथा सल्वा उतारा। (हम ने कहा): इन स्वच्छ चीजों में से जो हम ने तुम्हें प्रदान की हैं, खाओ। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं (अवैज्ञा कर के) अपने प्राणों पर अत्याचार कर रहे थे।

161. और जब उन (बनी इस्राईल) से कहा गया कि इस नगर (बैतुल मकदिस) में बस जाओ, और उस में से जहाँ इच्छा हो खाओ, और कहो कि हमें क्षमा कर दे, तथा द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे, और सत्कर्मियों को और अधिक देंगे।
162. तो उन में से अत्याचारियों ने उस बात को दूसरी बात से<sup>[1]</sup> बदल दिया जो उन से कही गयी थी। तो हम ने उन पर आकाश से प्रकोप उतार दिया। क्यों कि वह अत्याचार कर रहे थे।
163. तथा (हे नबी!) इन से उस नगरी के सम्बंध में प्रश्न करो जो समुद्र (लाल सागर) के समीप थी, जब उस के निवासी सब्ल (शनिवार) के

الْمَنَّ وَالشَّلُوْيِّ كُلُّوْا مِنْ طَهِيْتِ مَا  
رَزَقْنَاهُكُمْ وَمَا أَظْلَمُوْنَا وَلَكِنْ كَانُوا  
أَنْسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ⑤

وَأَذْفَلَ لَهُمْ اسْكَنْنَا هَذِهِ الْقُرْيَةَ  
وَكُلُّوْا مِنْهَا حَيْثُ شَئْتُمْ وَقُولُوا  
حَطَّةً قَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَدُ الْغُفْرَلَمْ  
خَطِيْشَتِكُمْ سَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ⑥

مَذَلَّلَ الَّذِيْنَ كَلَمُوا مِنْهُمْ قُولًا عَيْرَ  
الَّذِيْنِ قُيْلَ لَهُمْ فَارْسَلْنَا عَلَيْهِمْ  
رِجْرًا قَنْ الشَّمَاءَ بِمَا كَاثُوا  
يَظْلِمُوْنَ ٧

وَسَلَّهُمْ عَنِ الْقُرْيَةِ أَكْيَ كَانَتْ  
حَاضِرَةً الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبُّتِ إِذْ  
تَأْتِيْهُمْ جِئْنَاهُمْ يَوْمَ سَجَّتْهُمْ شَرَعًا

1 और चूतड़ों के बल खिसकते और यह कहते हुये प्रवेश किया कि गेहूँ मिले। (सहीह बुखारी- 4641)

दिन के विषय में आज्ञा का उल्लंघन<sup>[1]</sup> कर रहे थे, जब उन के पास उन की मछलियाँ उन के सब्त के दिन पानी के ऊपर तैर कर आ जाती थीं और सब्त का दिन न हो तो नहीं आती थी। इसी प्रकार उन की अवैज्ञा के कारण हम उन की परीक्षा ले रहे थे।

164. तथा जब उन में से एक समुदाय ने कहा कि तुम उन्हें क्यों समझा रहे हो जिन्हें अल्लाह (उन की अवैज्ञा के कारण) ध्वस्त करने अथवा कड़ा दण्ड देने वाला है? उन्होंने कहा: तुम्हारे पालनहार के समक्ष क्षम्य होने के लिये, और इस आशा में कि वह आज्ञाकारी हो जायें।<sup>[2]</sup>

165. फिर जब उन्होंने जो कुछ उन्हें स्मरण कराया गया, उसे भुला दिया तो हम ने उन लोगों को बचा लिया, जो उन को बुराई से रोक रहे थे, और हम ने अत्याचारियों को कड़ी यातना में उन की अवैज्ञा के कारण घेर लिया।

166. फिर जब उन्होंने उस का उल्लंघन किया जिस से वे रोके गये थे, तो हम ने उन से कहा कि तुच्छ बंदर

وَيَوْمَ لَا يَسْتَهِنُ لَا تَأْتِيهِمْ كُلُّ لِكْ<sup>۱</sup>  
بَلْ لُؤْهُمْ بِهَا كَانُوا يَفْسُقُونَ

وَإِذْ قَالَتْ أَمَّةٌ مُّنْهَمْ لَهُمْ نَعْظُونَ قَوْمًا لِّلَّهِ  
مُّهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا سَيِّدًا قَالُوا  
مَعْذِرَةً إِلَى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَقَوَّنَ<sup>۲</sup>

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِرَ إِلَيْهِ أَجَبَنَا اللَّذِينَ يَهُنَّ عَنِ  
الثُّوَّهِ وَأَخْدُنَا الَّذِينَ كَلَمْوَأَعْدَ إِلَيْنِيُّ  
بِهَا كَانُوا يَفْسُقُونَ<sup>۳</sup>

فَلَمَّا عَتَّوْا عَنْ مَا نَهَا وَاعْنَهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا  
قَرْدَهَ خَسِيْنَ<sup>۴</sup>

1 क्यों कि उन के लिये यह आदेश था कि शनिवार को मछलियों का शिकार नहीं करेंगे। अधिकांश भाष्यकारों ने उस नगरी का नाम ईला (ईलात) बताया है जो कुलजुम सागर के किनारे पर आवाद थी।

2 आयत में यह संकेत है कि बुराई को रोकने से निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि हो सकता है कि किसी के दिल में बात लग ही जाये, और यदि न भी लगे तो अपना कर्तव्य पूरा हो जायेगा।

हो जाओ।

167. और याद करो जब आप के पालनहार ने घोषणा कर दी कि वह प्रलय के दिन तक उन (यहूदियों) पर उन्हें प्रभुत्व देता रहेगा जो उन को घोर यातना देते रहेंगे<sup>[1]</sup> निःसंदेह आप का पालनहार शीघ्र दण्ड देने वाला है, और वह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

168. और हम ने उन्हें धरती में कई सम्प्रदायों में विभक्त कर दिया, उन में कुछ सदाचारी थे, और कुछ इस के विपरीत थे। हम ने अच्छाईयों तथा बुराईयों दोनों के द्वारा उन की परीक्षा ली, ताकि वह (कुकर्मा से) रुक जाये।

169. फिर उन के पीछे कुछ ऐसे लोगों ने उन की जगह ली जो पुस्तक के उत्तराधिकारी हो कर भी तुच्छ संसार का लाभ समेटने लगे। और कहने लगे कि हमें क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि उसी के समान उन्हें लाभ हाथ आ जाये तो उसे भी ले लेंगे। क्या उन से पुस्तक का दृढ़ वचन नहीं लिया गया है कि अल्लाह पर सच्च ही बोलेंगे, जब कि पुस्तक में जो कुछ है उस का

وَإِذَا تَذَمَّنَ رَبُّكَ لِيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ مَا لَيْسَ بِيَوْمٍ  
الْقِيَمَةُ مِنْ كُلِّ مُؤْمِنٍ وَمِنْ الْعَدَابِ إِنَّ رَبَّكَ  
لَسْرِيمُ الْعِقَابٍ وَإِنَّهُ لِغَفُورٌ رَّحِيمٌ<sup>④</sup>

وَقَطَعْتُمُهُمْ فِي الْأَرْضِ أَمْمًا مِنْهُمْ الصَّلِحُونَ  
وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَأْنُهُمْ بِالْحَسْنَاتِ  
وَالشَّيْءَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ<sup>⑤</sup>

فَخَلَقَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ قَرُُبُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ  
عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَى وَيَقُولُونَ سَيَغْزِلُنَا وَإِنْ  
يَأْتِيهِمْ عَرَضٌ مِثْلُهُ يَأْخُذُونَهُ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ  
قِتْلَاقُ الْكِتَابِ أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا لِعْنَّ  
وَدَرْسُوا نَافِيَةً وَاللَّذُرُ الْأَخْرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَسْعَوْنَ  
أَفَلَا تَعْقُلُونَ<sup>⑥</sup>

1 यह चेतावनी बनी इस्माईल को बहुत पहले से दी जा रही थी। ईसा (अलैहिस्सलाम) से पूर्व आने वाले नवियों ने बनी इस्माईल को डराया कि अल्लाह की अवैज्ञा से बचो। और स्वयं ईसा ने भी उन को डराया परन्तु वह अपनी अवैज्ञा पर बाकी रहे जिस के कारण अल्लाह की यातना ने उन्हें घेर लिया और कई बार बैतुल मक्दिस को उजाड़ा गया, और तौरात जलाई गई।

अध्ययन कर चुके हैं? और परलोक का घर (स्वर्ग) उत्तम है उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों। तो क्या वह इतना भी नहीं<sup>[1]</sup> समझते?

170. और जो लोग पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ते, और नमाज की स्थापना करते हैं तो वास्तव में हम सत्कर्मियों का प्रतिफल अकारत् नहीं करते।
171. और जब हम ने उन के ऊपर पर्वत को इस प्रकार छा दिया जैसे वह कोई छतरी हो, और उन्हें विश्वास हो गया कि वह उन पर गिर पड़ेगा, (तथा यह आदेश दिया कि) जो (पुस्तक) हम ने तुम्हें प्रदान की है उसे दृढ़ता से थाम लो, तथा उस में जो कुछ है उसे याद रखो, ताकि तुम आज्ञाकारी हो जाओ।
172. तथा (वह समय याद करो) जब आप के पालनहार ने आदम के पुत्रों की पीठों से उन की संतति को निकाला, और उन को स्वयं उन पर साक्षी (गवाह) बनाया: क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ? सब ने कहा: क्यों नहीं? हम (इस के) साक्षी<sup>[2]</sup> हैं। ताकि प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इस से असूचित थे।

وَالَّذِينَ يُمْسِكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّا لَ  
نُفَيِّعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ①

وَإِذْ نَقَنَا الْجَبَلَ فَوَقَهُمْ كَانَهُ طَلْهٌ وَظَبَّاً إِنَّهُ  
وَاقِعٌ بِهِمْ هُدُوًّا مَّا أَعْيَنُمْ يُقْتَلُونَ وَإِذْ كُرِبَوا مَا  
فِيهِ لَعْلَكُمْ تَسْتَفِنُونَ ②

وَإِذَا خَذَلَنَا بَكَ مِنْ أَبْنَى أَدَمَ مِنْ طَهُورِهِ  
ذُرْرَيْتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى آنفِيهِمْ أَلْسُنُ  
بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلْ شَهِدْنَاكُمْ لَقَوْلُوا يَوْمَ الْقِيَمةَ  
إِنَّا لَنَاعِنْ هَذَا غَفْلَتِنَ ③

1 इस आयत में यहूदी विद्वानों की दुर्दशा बताई गयी है कि वह तुच्छ संसारिक लाभ के लिये धर्म में परिवर्तन कर देते थे और अवैध को वैध बना लेते थे। फिर भी उन्हें यह गर्व था कि अल्लाह उन्हें अवश्य क्षमा कर देगा।

2 यह उस समय की बात है जब आदम अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति के पश्चात् उन की सभी संतान को जो प्रलय तक होगी, उन की आत्माओं से अल्लाह ने अपने पालनहार होने की गवाही ली थी। (इन्हे कसीर)

173. अथवा यह कहो कि हम से पूर्व हमारे पूर्वजों ने शिर्क (मिश्रण) किया और हम उन के पश्चात् उन की संतान थे। तो क्या तू गुमराहों के कर्म के कारण हमारा विनाश<sup>[1]</sup> करेगा?
174. और इसी प्रकार हम आयतों को खोल खोल कर बयान करते हैं ताकि लोग (सत्य की ओर) लौट जायें।
175. और उन्हें उस की दशा पढ़ कर सुनायें जिसे हम ने अपनी आयतों (का ज्ञान) दिया, तो वह उस (के खोल से) निकल गया। फिर शैतान उस के पीछे लग गया और वह कुपथों में हो गया।
176. और यदि हम चाहते तो उन (आयतों) द्वारा उस का पद ऊँचा कर देते, परन्तु वह माया मोह में पड़ गया, और अपनी मनमानी करने लगा। तो उस की दशा उस कुत्ते के समान हो गयी जिसे हाँको तब भी जीभ निकाले हाँपता रहे और छोड़ दो तब भी जीभ निकाले हाँपता है। यही उपमा है उन लोगों की जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं। तो आप यह कथायें उन को सुना दें, संभवतः वह सोच विचार करें।
177. उन की उपमा कितनी बुरी है

أَتَقُولُ لَهُمَا أَشْرَكُوا بِاً وَنَا مِنْ قَبْلٍ وَكُنَّا ذُرَيْةً  
مِنْ بَعْدِهِمْ أَفَمُهْلِكُنَا إِيمَانُ الْمُبْطَلِوْنَ ④

وَكُنَّا لَكَ نَقْصُلُ الْآيَتِ وَلَعْنُهُمْ يَرْجِعُونَ ⑤

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا أَذْنَى إِنَّمَا إِنْتَ فَانْسَلَخَ  
مِنْهَا فَلَكُمْ بَعْدَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَرُوْنَ ⑥

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكَهُ أَخْلَدَ إِلَى  
الْأَرْضِ وَإِسْعَهُوْهُ فَنَسْلَهُ كَمِثْلُ الْكَلْبِ إِنْ  
يَعْمَلُ عَلَيْهِ يَلْهُثُ أَوْ تُنْزَهُهُ يَلْهُثُ ذَلِكَ  
مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاً يَرْتَبَّنَا  
فَاقْصُصِ الْقَصْصَ لَعْنُهُمْ يَتَنَزَّلُونَ ⑦

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاً يَرْتَبَّنَا

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के अस्तित्व तथा एकेश्वरवाद की आस्था सभी मानव का स्वभाविक धर्म है। कोई यह नहीं कह सकता की मैं अपने पूर्वजों की गुमराही से गुमराह हो गया। यह स्वभाविक आन्तरिक आवाज़ है जो कभी दब नहीं सकती।

जिन लोगों ने हमारी आयतों को  
झुठला दिया! और वे अपने ही  
ऊपर अत्याचार<sup>[1]</sup> कर रहे थे।

وَأَنفُسُهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ④

178. जिसे अल्लाह सुपथ कर दे वही सीधी  
राह पा सकता है। और जिसे कुपथ  
कर दें<sup>[2]</sup> तो वही लोग असफल हैं।

مَنْ يَعْمَدُ إِلَّا اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيُّ وَمَنْ يُضْلَلُ  
فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَابُرُونَ ⑤

179. और बहुत से जिन्हें और मानव को  
हम ने नरक के लिये पैदा किया  
है। उन के पास दिल हैं जिन से  
सोच विचार नहीं करते, तथा उन  
की आँखें हैं जिन से<sup>[3]</sup> देखते नहीं,  
और कान हैं जिन से सुनते नहीं।  
वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन  
से भी अधिक कुपथ है, यही लोग  
अचेतना में पड़े हुये हैं।

وَلَقَدْ ذَرَنَا لِلْجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسَانَ  
قُلُوبٌ لَا يَفْعَمُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْنَانٌ لَا يُبْغِرُونَ  
بِهَا وَلَهُمْ أَذْنُنٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا وَلَهُمْ  
كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَئِكُمُ الْغَلُونُ

180. और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं,  
अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो।  
और उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों

وَيَلْهُ الْأَسْمَاءُ الْحَسْنَى قَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الظَّنِينَ  
يُلْجِدُونَ فِي أَسْبَابِهِ شَيْجُورُونَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑥

1 भाष्यकारों ने नबी سल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के युग और प्राचीन युग के कई ऐसे व्यक्तियों का नाम लिया है जिन का यह उदाहरण हो सकता है। परन्तु आयत का भावार्थ बस इतना है कि प्रत्येक व्यक्ति जिस में यह अवगुण पाये जाते हों उस की दशा यही होती है, जिस की जीभ से माया मोह के कारण राल टपकती रहती है, और उस की लोभाग्नि कभी नहीं बुझती।

2 कुर्�आन ने बार बार इस तथ्य को दुहराया है कि मार्गदर्शन के लिये सोच विचार की आवश्यकता है। और जो लोग अल्लाह की दी हुई विचार शक्ति से काम नहीं लेते वही सीधी राह नहीं पाते। यही अल्लाह के सुपथ और कुपथ करने का अर्थ है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि सत्य को प्राप्त करने के दो ही साधन हैं: ध्यान और ज्ञान। ध्यान यह है कि अल्लाह की दी हुयी विचार शक्ति से काम लिया जाये। और ज्ञान यह है कि इस विश्व की व्यवस्था को देखा जाये और नवियों द्वारा प्रस्तुत किये हुये सत्य को सुना जाये, और जो इन दोनों से वंचित हो वह अन्धा बहरा है।

में परिवर्तन<sup>[۱]</sup> करते हैं, उन्हें शीघ्र ही उन के कुकर्मा का कुफल दे दिया जायेगा।

181. और उन में से जिन्हें हम ने पैदा किया है, एक समुदाय ऐसा (भी) है, जो सत्य का मार्ग दर्शाता तथा उसी के अनुसार (लोगों के बीच) न्याय करता है।
182. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया, हम उन्हें क्रमशः (विनाश तक) ऐसे पहुँचायेंगे कि उन्हें इस का ज्ञान नहीं होगा।
183. और उन्हें अवसर देंगे, निश्चय मेरा उपाय बड़ा सुदृढ़ है।
184. और क्या उन्होंने यह नहीं सोचा कि उन का साथी<sup>[۲]</sup> तनिक भी पागल नहीं है? वह तो केवल खुले रूप से सचेत करने वाला है।
185. क्या उन्होंने आकाशों तथा धरती के राज्य को और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है, उसे नहीं देखा?<sup>[۳]</sup> और (यह भी नहीं सोचा कि) हो सकता है कि उन का (निर्धारित) समय समीप आ गया हो? तो फिर

وَمَنْ خَلَقْنَا أُمَّةً يَهْدِونَ بِأَعْيُنِ وَهِيَ  
يَعْدُلُونَ<sup>۱</sup>

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا إِلَيْنَا سَنُسْتَدِرُ جُهَنَّمَ مِنْ  
حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ<sup>۲</sup>

وَأَمْلَى لَهُمْ إِنَّ كَيْرُى مَبْيَنٌ<sup>۳</sup>

أَوْلَمْ يَنْظَرُوا إِنَّ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا  
خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَإِنْ عَلِيَّ أَنْ يَكُونَ فِي  
أَنْزَلٍ بَأْجَلُهُمْ قَبْلَيْ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُوَمِّنُونَ<sup>۴</sup>

أَوْلَمْ يَنْظَرُوا إِنَّ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا  
خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَإِنْ عَلِيَّ أَنْ يَكُونَ فِي  
أَنْزَلٍ بَأْجَلُهُمْ قَبْلَيْ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُوَمِّنُونَ<sup>۴</sup>

1 अर्थात् उस के गौणिक नामों से अपनी मर्तियों को पुकारते हैं। जैसे अज़ीज़ से «उज़्ज़ा», और इलाह से «लात» इत्यादि।

2 साथी से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, जिन को नबी होने से पहले वही लोग "अमीन" कहते थे।

3 अर्थात् यदि यह विचार करें, तो इस पूरे विश्व की व्यवस्था और उस का एक एक कण अल्लाह के अस्तित्व और उस के गुणों का प्रमाण है। और उसी ने मानव जीवन की व्यवस्था के लिये नवियों को भेजा है।

इस (कुर्अन) के पश्चात् वह किस बात पर ईमान लायेंगे?

186. जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उस का कोई पथदर्शक नहीं और उन्हें उन के कुकर्मा में बहकते हुये छोड़ देता है।
187. (हे नबी!) वे आप से प्रलय के विषय में प्रश्न करते हैं कि वह कब आयेगी? कह दो कि उस का ज्ञान तो मेरे पालनहार के पास है, उसे उस के समय पर वही प्रकाशित कर देगा। वह आकाशों तथा धरती में भारी होगी, तुम पर अकस्मात् आ जायेगी। वह आप से ऐसे प्रश्न कर रहे हैं जैसे कि आप उसी की खोज में लगे हुये हों। आप कह दें कि उस का ज्ञान अल्लाह ही को है। परन्तु<sup>[1]</sup> अधिकांश लोग इस (तथ्य) को नहीं जानते।
188. आप कह दें कि मझे तो अपने लाभ और हानि का अधिकार नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहे (वही होता है)। और यदि मैं गैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता तो मैं बहुत सा लाभ प्राप्त कर लेता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने तथा शुभसूचना देने वाला हूँ जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।
189. वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारी उत्पत्ति एक जीव<sup>[2]</sup> से की, और

مَنْ يُضْلِلُ إِلَهٌ فَلَا هَادِئٌ لَهُ وَيَدْرُغُ مِنْ طَفْلًا فَهُمْ يَعْمَلُونَ ۝

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ يَقُولُ مُرْسِلًا قُلْ إِنَّمَا عِنْدَهَا عِنْدَ رَبِّنَّ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا وَقِيلَ لَهُ فَوْقَلَتْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا تَرَيْنَاهُ إِلَّا بَعْدَهُ يَسْأَلُونَكَ كُلُّكُمْ حَقِيقَةٌ عَمَّا أَنْتَ إِذَا عَلِمْتُمْ فَإِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَا كُنْ أَنْتُمُ الظَّالِمُونَ ۝

قُلْ لَا أَمْلُكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْلَامُتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَا سُكْرَتُ مِنْ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِي الشُّوُرُونَ أَنَا لَا أَنْزُلُ وَبِشَدَّدِ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

هُوَ أَنِّي خَلَقْتُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةً وَجَعَلَ

1 मङ्का के मिश्रणवादी आप से उपहास स्वरूप प्रश्न करते थे, कि यदि प्रलय होना सत्य है, तो बताओ वह कब होगी?

2 अर्थात् आदम अलैहिस्सलाम से।

उसी से उस का जोड़ा बनाया,  
ताकि उस से उसे संतोष मिले। फिर  
जब किसी<sup>[1]</sup> ने उस (अपनी स्त्री) से  
सहवास किया तो उस (स्त्री) को  
हल्का सा गर्भ हो गया। जिस के  
साथ वह चलती फिरती रही,  
फिर जब बोझल हो गयी तो दोनों  
(पति-पत्नी) ने अपने पालनहार से  
प्रार्थना की: यदि तू हमें एक अच्छा  
बच्चा प्रदान करेगा तो हम अवश्य  
तेरे कृतज्ञ (आभारी) होंगे।

190. और जब उन दोनों को (अल्लाह ने)  
एक स्वस्थ बच्चा प्रदान कर दिया  
तो अल्लाह ने जो प्रदान किया उस  
में दूसरों को उस का साझी बनाने  
लगे। तो अल्लाह इन की शिक्षा<sup>[2]</sup> की  
बातों से बहुत ऊँचा है।
191. क्या वह अल्लाह का साझी उन्हें बनाते  
हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते, और  
वह स्वयं पैदा किये हुये हैं।
192. तथा न उन की सहायता कर सकते  
हैं, और न स्वयं अपनी सहायता  
कर सकते हैं।
193. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की  
ओर बुलाओ तो तुम्हारे पीछे नहीं चल  
सकते। तुम्हारे लिये बराबर है चाहे

مِنْهَا زَوْجٌ مَا لَيْسَ كُنَّا لَهُنَا فَلَمَّا آتَنَا هَامَتْ  
حَمْلًا أَخْفِيَنَا فَمَرَرْتُ بِهِ فَلَمَّا آتَيْنَا أَثْلَمَتْ دَعْوَاهُ اللَّهُ  
رَبِّهِمَا لَيْلَنْ اتَّهَمَنَا صَالِحُ الْحَالِنَلُونَ مِنَ الشَّكِيرِينَ

فَلَمَّا أَتَهُمْ مَا صَارُوا جَعَلَ اللَّهُ شَرِيكَهُ فِيمَا أَنْهَا  
فَعَلَ اللَّهُ عَمَّا يُشَرِّكُونَ

إِنَّهُمْ كُونَ مَا لَا يَعْلَمُ شَيْئًا وَهُمْ غَلَقُونَ

وَلَا يَسْتَطِعُونَ لِهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفَسُهُمْ  
يُنَصْرُونَ

وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَبْغُونَ حَسَداً  
عَلَيْكُمْ أَدْعُوكُمْ لَمَرَأْنُوكُمْ صَادِقُونَ

1 अर्थात् जब मानव जाति के किसी पुरुष ने स्त्री के साथ सहवास किया।

2 इन आयतों में यह बताया गया है कि मिश्रणवादी स्वस्थ बच्चे अथवा किसी भी आवश्यकता या आपदा निवारण के लिये अल्लाह ही से प्रार्थना करते हैं। और जब स्वस्थ सुन्दर बच्चा पैदा हो जाता है तो देवी देवताओं, और पीरों के नाम चढ़ावे चढ़ाने लगते हैं। और इसे उन्हीं की दया समझते हैं।

उन्हें पुकारो अथवा तुम चुप रहो।

194. वास्तव में अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो वे तुम्हारे जैसे ही (अल्लाह के) दास हैं। अतः तुम उन से प्रार्थना करो फिर वह तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दें, यदि उन के बारे में तुम्हारे विचार सत्य हैं।
195. क्या इन (पत्थर की मूर्तियों) के पाँव हैं जिन से चलती हों? अथवा उन के हाथ हैं जिन से पकड़ती हों? या उन के आँखें हैं जिन से देखती हों? अथवा कान हैं जिन से सुनती हों? आप कह दें कि अपने साक्षियों को पुकार लो, फिर मेरे विरुद्ध उपाय कर लो, और मुझे कोई अवसर न दो।
196. वास्तव में मेरा संरक्षक अल्लाह है। जिस ने यह पुस्तक (कुर्�आन) उतारी है। और वही सदाचारियों की रक्षा करता है।
197. और जिन को अल्लाह के सिवा तुम पुकारते हो वह न तो तुम्हारी सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं।
198. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वह सुन नहीं सकते। और (हे नबी!) आप उन्हें देखेंगे कि वे आप की ओर देख रहे हैं, जब कि वास्तव में वह कुछ नहीं देखते।
199. (हे नबी!) आप क्षमा से काम लें, और सदाचार का आदेश दें। तथा

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُوَنِ اللَّهِ عِبَادٌ  
أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلَيُسْتَجِيبُوكُمْ  
كُلُّنَا مُصَدِّقٌ ④

أَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَرْأْمٌ أَيْمَنٌ  
بِهَا أَمْ أَهُمْ أَعْيُنٌ يَعْجُرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَذْنٌ  
يَسْمَعُونَ بِهَا أَفْلِيلٌ أَدْعُوا شَرِكَاءَ كُلُّ ثُمَّ  
كَيْدُونَ فَلَا تُنْظَرُونَ ⑤

إِنَّ فِي لِيَنِ اللَّهِ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّ  
الصَّالِحِينَ ⑥

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُوَنِهِ لَا يَسْتَطِعُونَ  
نَصْرَكُمْ وَلَا أَنفَسَهُمْ يَضْرُونَ ⑦

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَمْعَا وَتَرَاهُمْ  
يَنْظَرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يَصْرُونَ ⑧

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجِهَلِينَ ⑨

अज्ञानियों की ओर ध्यान<sup>[1]</sup> न दें।

200. और यदि शैतान आप को उकसाये तो अल्लाह से शरण माँगिये। निःसंदेह वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

201. वास्तव में जो आज्ञाकारी होते हैं यदि शैतान की ओर से उन्हें कोई बुरा विचार आ भी जाये तो तत्काल चौंक पड़ते हैं और फिर अकस्मात् उन को सूझ आ जाती है।

202. और जो शैतानों के भाई हैं वे उन को कुपथ में खींचते जाते हैं, फिर (उन्हें कुपथ करने में) तनिक भी कमी (आलस्य) नहीं करते।

203. और जब आप इन (मिश्रणवादियों) के पास कोई निशानी न लायेंगे तो कहेंगे कि क्यों (अपनी ओर से) नहीं बना ली? आप कह दें कि मैं केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पालनहार के पास से मेरी ओर वहयी की जाती है। यह सूझ की बातें हैं तुम्हारे पालनहार की ओर से, (प्रमाण) हैं, तथा मार्गदर्शन और दया है, उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

204. और जब कुर्झान पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो, तथा मौन साध लो। शायद कि तुम पर दया<sup>[2]</sup> की जाये।

وَإِمَّا يَرَعِيَكَ مِنَ الشَّيْطَنِ نَرْعَى فَاسْتَعِدْ  
بِاللَّهِ إِنَّهُ سَيِّدُ عَلَيْهِمْ

لَئِنَّ الَّذِينَ اتَّقُوا لَاذَامَتْهُمْ طَيْفٌ مَّنْ  
الشَّيْطَنِ تَدْكُرُوا فَإِذَا هُمْ شَيْرُونَ

وَإِحْوَانُهُمْ يَهْدُوُهُمْ فِي الْغَيْرِ لَا يُفَصِّرُونَ

وَإِذَا أَخْرَجْنَاهُمْ بِأَيْكَهُ قَالُوا لَا جُنَاحَ لَهُمْ قُلْ  
إِنَّمَا أَتَيْمُ مَا يُؤْتَنِي إِنَّمَا مِنْ رَّبِّنِي هَذَا أَبْصَارُ  
مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدُّى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَلَا تُصْنِعُوا  
لَعَلَّكُمْ تُرَحَّمُونَ

1 हदीस में है कि अल्लाह ने इसे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने के बारे में उतारा है। (देखिये: सहीह बुखारी- 4643)

2 यह कुर्झान की एक विशेषता है कि जब भी उसे पढ़ा जाये तो मुसलमान पर

205. और (हे नबी!) अपने पालनहार का स्मरण विनय पूर्वक तथा डरते हुये और धीमे स्वर में प्रातः तथा संध्या करते रहो। और उन में न हो जाओ जो अचेत रहते हैं।

206. वास्तव में जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के समीप है वह उस की इबादत (वंदना) से अभिमान नहीं करते। और उस की पवित्रता वर्णन करते रहते हैं, और उसी को सज्दा<sup>[1]</sup> करते हैं।

وَإِذْ كُرْزَيْكَ فِي نَسْكَ تَضَرُّعًا وَجِيْفَةً  
وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْفُدُورِ  
وَالْأَصَالِ وَلَا إِلَّا مِنَ الْغَيْلَانِ<sup>①</sup>

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ  
عِبَادَتِهِ وَسَيِّئُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ<sup>۱</sup>

अनिवार्य है कि वह ध्यान लगा कर अल्लाह का कलाम सुने। हो सकता है कि उस पर अल्लाह की दया हो जाये। काफिर कहते थे कि जब कुर्�आन पढ़ा जाये तो सुनो नहीं, बल्कि शोर गुल करो। (देखिये: सूरह हा, मीम सज्दा-26)

<sup>1</sup> इस आयत के पढ़ने तथा सुनने वाले को चाहिये कि सज्दा तिलावत करें।